UNIVERSAL

Record File

संस्कृत साहित्य सौ
(Ms.)

File 2

File No. ____________

Name ____________

Address ____________

Subject ____________

Serial No. ____________

संस्कृत साहित्य सौरभम्

लेखकः :—
सत्यव्रत शास्त्री

प्राक्कथन

जनसाधारण में संस्कृत भाषा के विषय में एक धारणा बद्धमूल हो चुकी है और वह यह कि संस्कृत बहुत क्लिष्ट है। संस्कृत के सार्वत्रिक ह्रास की पृष्ठभूमि में इस धारणा का बहुत बड़ा हाथ रहा है। पर यह धारणा कितनी भ्रान्त और निर्मूल है यही सिद्ध करने के हेतु यह हमारा प्रयास है। इसमें हमें कितनी सफलता मिली है यह इस पत्रिका के अध्यापक और अध्येतागण ही बता सकते हैं। हमें पता था कि बालक संस्कृत से बहुत डर जाता है। वह इस भाषा को बहुत कठिन समझता है। हमारा उद्देश्य इस पुस्तक में यही रहा है कि संस्कृत को सरल से सरल रूप में प्रस्तुत किया जाय जिससे कि नन्हें विद्यार्थी भी इसके प्रति आकर्षित हों और इस देवभाषा का परिचय प्राप्त कर सकें।

दिल्ली - वैशाखपूर्णिमा

संस्कृत का उपदेशक -
सत्यव्रतशास्त्री

ॐ

प्रथमः पाठः

सः पठति ।

तौ पठतः ।

ते पठन्ति ।

सः लिखति ।

तौ लिखतः ।

ते लिखन्ति

सः पठति लिखति च ।

तौ पठतः लिखतः च ।

ते पठन्ति लिखन्ति च ।

अभ्यास

१- नये शब्द :—

सः — वह (पुरुष) (बालक) — पठ — पढ़ना

तौ — वे दोनों (पुरुष) (बालक) — लिख — लिखना

ते — वे सब (पुरुष) (बालक) — च — और

2. समझने के नियम :

पठति पठतः पठन्ति

लिखति लिखतः लिखन्ति

3. घर का काम :—

संस्कृत में अनुवाद ~~[illegible]~~ कीजिये :—

वे सब लिखते हैं । वे सब पढ़ते हैं ।

वह पढ़ता है । वह लिखता है ।

वे दोनों लिखते हैं । वे दोनों पढ़ते हैं ।

प्राक्कथन

जनसाधारण में संस्कृत भाषा के विषय में एक धारणा बद्धमूल हो चुकी है और वह यह कि संस्कृत बहुत क्लिष्ट है। संस्कृत के सार्वत्रिक ह्रास की पृष्ठभूमि में इस धारणा का बहुत बड़ा हाथ रहा है। पर यह धारणा कितनी भ्रान्त और निर्मूल है यही सिद्ध करने के हेतु यह हमारा प्रयास है। इसमें हमें कितनी सफलता मिली है यह इस पुस्तिका के अध्यापक और अध्येतागण ही बता सकते हैं। हमारे देश का नन्हा बालक संस्कृत से बहुत डर जाता है। वह इस भाषा को बहुत कठिन समझता है। हमारा उद्देश्य इस पुस्तक में यही रहा है कि संस्कृत को सरल से सरल रूप में प्रस्तुत किया जाय जिससे कि नन्हे विद्यार्थी भी इसके प्रति आकर्षित हों और इस देवभाषा का परिचय प्राप्त कर सकें।

दिल्ली - वैशाखपूर्णिमा

संस्कृत का एक सेवक -
सत्यव्रत शास्त्री

ॐ

प्रथमः पाठः

सः पठति ।

तौ पठतः ।

ते पठन्ति ।

सः लिखति ।

तौ लिखतः ।

ते लिखन्ति

सः पठति लिखति च ।

तौ पठतः लिखतः च ।

ते पठन्ति लिखन्ति च ।

१- नये शब्द :— उपन्यास

सः वह (पुरुष) बालक पठ — पढ़ना

तौ वे दोनों (पुरुष) बालक लिख — लिखना

ते वे सब (पुरुष) बालक च — और

२. समझने के लिये :—

पठति पठतः पठन्ति

लिखति लिखतः लिखन्ति

३. घर का काम :—

संस्कृत में अनुवाद ~~करो~~ कीजिये :—

वे सब लिखते हैं । वे सब पढ़ते हैं ।

वह पढ़ता है । वह लिखता है ।

वे दोनों लिखते हैं । वे दोनों पढ़ते हैं ।

Duplicate

Serial No. 1785

Roll No. 80069

PANJAB UNIVERSITY
(SEAL)

MATRICULATION EXAMINATION

SESSION 1958

This is to certify that Pritam Dass son of Shri Beli Ram and of the B.K.High School, Ghee Mandi, Amritsar passed the Matriculation Examination of this University held in March 1958 and was placed in the Second Division obtaining 484 marks.

Passed also in One Additional Subject.

Date of Birth First October One Thousand Nine Hundred and forty only (1.10.1940)

CHANDIGARH
12th January 1959.

Sd/-----------------
ASSISTANT REGISTRAR(EXAMS).

ATTESTED TO BE A TRUE COPY

SIGNATURE

SEAL

DATED . .1959.

द्वितीय: पाठ:

सा पठति ।
ते पठत: ।
ता: पठन्ति

सा नमति ।
ते नमत: ।
ता: नमन्ति

सा चलति ।
ते ~~चलत~~ अपि चलत: ।
ता: अपि चलन्ति ।

सा चलति ~~न नमति~~ पठति ।
ते चलत: पठत: च ।
ता: न लिखन्ति न च पठन्ति ।

सा नमति । ता: न नमन्ति
ते न लिखत: । ता लिखत: ।
ते चलन्त । ता: न चलन्ति ।

१. नये शब्द: (शब्दार्थ)

सा — वह (स्त्री या कन्या) । नम — नमस्कार करना ।
ते — वे दोनों (कन्यायें या स्त्रियां) चल — चलना ।
ता — वे सब (कन्यायें या स्त्रियां) अपि — भी ।

२. ~~कीजिये~~ रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिये :—

१. .... पठत: ४. ते ..... चलन्ति च ।
२. .... लिखन्ति ५. ते पठत: लिखत: .... ।
३. ता .... ६. ता अपि .... ।

३. अनुवाद कीजिये :—

१. वे सब (स्त्रियां) नमस्कार करती हैं ।
२. वह (बालक) लिखता है, वह (कन्या) नहीं लिखती ।
३. वे दोनों भी चलते हैं ।
४. वह पढ़ती है, लिखती है और नमस्कार ... भी ...

Duplicate

Serial No. 1785

Roll No. 80069

PANJAB UNIVERSITY
(SEAL)

MATRICULATION EXAMINATION

SESSION 1958

This is to certify that Pritam Dass son of Shri Beli Ram and of the B.K.High School, Ghee Mandi, Amritsar passed the Matriculation Examination of this University held in March 1958 and was placed in the Second Division obtaining 484 marks.

Passed also in One Additional Subject.

Date of Birth First October One Thousand Nine Hundred and forty only (1.10.1940)

CHANDIGARH
12th January 1959.

Sd/----------------
ASSISTANT REGISTRAR(EXAMS).

ATTESTED TO BE A TRUE COPY

SIGNATURE

SEAL

DATED . .1959.

द्वितीयः पाठः

सा पठति ।
ते पठतः ।
ताः पठन्ति

सा नमति ।
ते नमतः ।
ताः नमन्ति

सा चलति ।
ते ~~चलतः~~ अपि चलतः ।
ताः अपि चलन्ति ।

सा चलति ~~[illegible]~~ न ~~चलति~~ पठति ।
ते चलतः पठतः च ।
ताः न लिखन्ति न च पठन्ति ।

सा नमति । ताः न नमन्ति
ते न लिखतः । ते लिखतः ।
ते चलन्ति । ताः न चलन्ति ।

अभ्यास

१ नये शब्द :—

सा — वह (स्त्री या कन्या) नम् — नमस्कार करना ।
ते — वे दोनों (कन्यायें या स्त्रियां) चल् — चलना ।
ताः — वे सब (कन्यायें या स्त्रियां) अपि — भी ।

२. ~~[illegible]~~ रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिये :—

१ ..... पठतः ४. ते ...... चलन्ति च ।
२ .... लिखन्ति ५. ते पठथः लिखथः .... ।
३. सा ..... ६. ते अपि ।

घर का काम

३. अनुवाद कीजिये :—

१. वे सब (स्त्रियां) नमस्कार करती हैं ।
२. वह (बालक) लिखता है, वह (कन्या) नहीं लिखती ।
३. वे दोनों भी चलते हैं ।
४. सब पढ़ते हैं लिखते हैं और नमस्कार करते हैं ।

Duplicate

Serial No. 1785

Roll No. 80069

PANJAB UNIVERSITY
(SEAL)

MATRICULATION EXAMINATION

SESSION 1958

This is to certify that Pritam Dass son of Shri Beli Ram and of the B.K.High School, Ghee Mandi, Amritsar passed the Matriculation Examination of this University held in March 1958 and was placed in the Second Division obtaining 484 marks.

Passed also in One Additional Subject.

Date of Birth First October One Thousand Nine Hundred and forty only (1.10.1940)

CHANDIGARH
12th January 1959.

Sd/-----------------
ASSISTANT REGISTRAR(EXAMS).

ATTESTED TO BE A TRUE COPY

SIGNATURE

SEAL

DATED . .1959.

द्वितीयः पाठः

सा पठति ।
ते पठतः ।
ताः पठन्ति

सा नमति ।
ते नमतः ।
ताः नमन्ति

सा चलति ।
ते ~~चलत~~ अपि चलतः ।
ताः अपि चलन्ति ।

सा चलति ~~न~~ न ~~चलति~~ पठति ।
ते चलतः पठतः च ।
ताः न लिखन्ति न च पठन्ति ।

सा नमति । ताः न नमन्ति
ते न लिखतः । ते लिखतः ।
ते चलन्ति । ताः न चलन्ति ।

अभ्यास

१. नये शब्द :—
ता — वह (स्त्री या कन्या) । नम — नमस्कार करना ।
ते — वे दोनों (कन्याएँ या स्त्रियाँ) चल — चलना ।
ताः — वे सब (कन्याएँ या स्त्रियाँ) अपि — भी ।

२. ~~[illegible]~~ रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिये :—
१. ...... पठतः । ४. ते ...... चलन्ति च ।
२. ...... लिखन्ति ५. ते पठथः लिखथः .... ।
३. ता ...... ६. ताः अपि ...... ।

घर का काम

३. अनुवाद कीजिये :—
१. वे सब (स्त्रियाँ) नमस्कार करती हैं ।
२. वह (बालक) लिखता है, वह (कन्या) नहीं लिखती ।
३. वे दोनों भी चलते हैं ।
४. सब पढ़ते हैं लिखते हैं और नमस्कार करते हैं ।

Duplicate

Serial No. 1785

Roll No. 80069

PANJAB UNIVERSITY
(SEAL)

MATRICULATION EXAMINATION

SESSION 1958

This is to certify that Pritam Dass son of Shri Beli Ram and of the B.K.High School, Ghee Mandi, Amritsar passed the Matriculation Examination of this University held in March 1958 and was placed in the Second Division obtaining 484 marks.

Passed also in One Additional Subject.

Date of Birth First October One Thousand Nine Hundred and forty only (1.10.1940)

CHANDIGARH
12th January 1959.

Sd/----------------
ASSISTANT REGISTRAR(EXAMS).

ATTESTED TO BE A TRUE COPY

SIGNATURE

SEAL

DATED . .1959.

तृतीयः पाठः

त्वम् हससि ।
युवाम् हसथः ।
यूयम् हसथ ।

त्वम् वदसि ।
युवाम् वदथः ।
यूयम् वदथ ।

किम् त्वम् पठसि ?
किम् युवाम् लिखथः ?
किम् यूयम् नमथ ?

त्वम् वदसि लिखसि हससि च ।
किम् युवाम् अपि लिखथः ~~हसथः~~ वदथः च ?
यूयम् न पठथ न चलथ न च हसथ ।
ते न लिखन्ति परम् युवाम् लिखथः ।

अभ्यास

१- नये शब्द :— त्वम् - तू
युवाम् - तुम दोनों
यूयम् - तुम सब
हस - हँसना
वद - बोलना
परम् - परन्तु

२. (मध्यम) के रूप :-

हससि	हसथः	हसथ
वदसि	वदथः	वदथ

३. घर का काम :—
अनुवाद कीजिये :-
१. तुम दोनों पढ़ते हो ।
२. वे सब ~~लिखते है~~ हँसते हैं ।
३. ~~तुम~~ तू बोलता है पर वह लिखता है ।
४. तुम दोनों भी नमस्कार करते हो ।
५. तुम सब चलते हो तथा बोलते हो ।

S.No..59059

Roll No. 80069

(SEAL)

PANJAB UNIVERSITY

DETAILED MARKS CERTIFICATE FOR PASS CANDIDATES

MATRICULATION EXAMINATION 1958.

Name...Pritam Dass son of Shri Beli Ram

S.NO.	Subjects	Marks obtained	Maximum Marks
1.	English	126	200
2.	Mathematics or Arithmetic & Household Accounts	130	200
3.	i) History	45	90
	ii) Geography	27	60
4.	Science	64	150
5.	Hindi	92	150

Total 484

(Four Hundred and eighty four only)

This certificate is valid only if produced along with Original certificate

Line below marks indicates failure in the subject and marks not included in the grand total.

CHANDIGARH
May 16,1958.

sd/---J.R.AGNIHOTRI
REGISTRAR

ATTESTED TO BE A TRUE COPY

SIGNATURE

SEAL

DATED . .1959.

चतुर्थः पाठः

अहम् खादामि ।

आवाम् खादावः ।

वयम् खादामः ।

अहम् गच्छामि ।

आवाम् गच्छावः ।

वयम् गच्छामः ।

वयम् न सदा पठामः खेलामः अपि ।

ता सदा पठति न खेलति न च खादति ।

आवाम् चलावः अपि हसावः अपि ।

अहम् न गच्छामि युवाम् गच्छथः ।

तौ अपि गच्छतः ते अपि गच्छन्ति ।

वयम् न हसामः परम् ते हसन्ति एव ।

2. नये शब्द :—

अहम् — मैं ~~खाद — खाना~~

आवाम् — हम दोनों (जा) गच्छ — जाना

वयम् — हम सब सदा — हमेशा

खाद — खाना ते — वे

एव — ही

2. समझने के लिये :—

खादामि खादावः खादामः

गच्छामि गच्छावः गच्छामः

3. घर का काम :—

(क) रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिये :—

1. अहम् ... पठामि ... लिखामि ।

2. आवाम् ... खेल... न ।

3. किम् त्वम् ... ?

4. ... सदा एव हसामः ।

(ख) अनुवाद कीजिये :—

1. हम सब जाते हैं । 2. तुम क्या देखते हो ? 3. वे दो

S.No..59059

Roll No. 80069

(SEAL)

PANJAB UNIVERSITY

DETAILED MARKS CERTIFICATE FOR PASS CANDIDATES

MATRICULATION EXAMINATION 1958.

Name...Pritam Dass son of Shri Beli Ram

S.NO.	Subjects	Marks obtained	Maximum Marks
1.	English	126	200
2.	Mathematics or Arithmetic & Household Accounts	130	200
3.	i) History	45	90
	ii) Geography	27	60
4.	Science	64	150
5.	Hindi	92	150
	Total	484	

(Four Hundred and eighty four only)

This certificate is valid only if produced along with Original certificate

Line below marks indicates failure in the subject and marks not included in the grand total.

CHANDIGARH
May 16,1958.

sd/---J.R.AGNIHOTRI
REGISTRAR

ATTESTED TO BE A TRUE COPY

SIGNATURE

SEAL

DATED . .1959.

अष्टमः पाठः

अहम् खादामि ।

आवाम् खादावः ।

वयम् खादामः ।

अहम् गच्छामि ।

आवाम् गच्छावः ।

वयम् गच्छामः ।

वयम् न सदा न पठामः खेलामः अपि ।

सा सदा पठति न खेलति न च खादति ।

आवाम् चलावः अपि हसावः अपि ।

अहम् न गच्छामि युवाम् गच्छथः ।

तौ अपि गच्छतः ते अपि गच्छन्ति ।

वयम् न हसामः परम् ते हसन्ति एव ।

२. नये शब्द :—

अहम्	मैं	(गम्) गच्छ	जाना
आवाम्	हम दोनों	सदा	हमेशा
वयम्	हम सब	न	नहीं
खाद्	खाना	एव	ही

२. स्मरण के लिये :—

खादामि खादावः खादामः

गच्छामि गच्छावः गच्छामः

३. घर का काम :—

(क) रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिये :—

१. अहम् ... पठामि ... लिखामि ।

२. आवाम् ... खेलावः ... न ।

३. किम् त्वम् ... ?

४. ... सदा एव हसामः ।

(ख) अनुवाद कीजिये :—

१. हम सब जाते हैं । २. तुम क्या खेलते हो ? ३. वे दो लिखते हैं और पढ़ते हैं ३. मैं हमेशा ...

S.No..59059

Roll No. 80069

(SEAL)

PANJAB UNIVERSITY

DETAILED MARKS CERTIFICATE FOR PASS CANDIDATES

MATRICULATION EXAMINATION 1958.

Name...Pritam Dass son of Shri Beli Ram

S.NO.	Subjects	Marks obtained	Maximum Marks
1.	English	126	200
2.	Mathematics or Arithmetic & Household Accounts	130	200
3.	i) History	45	90
	ii) Geography	27	60
4.	Science	64	150
5.	Hindi	92	150

Total 484

(Four Hundred and eighty four only)

This certificate is valid only if produced along with Original certificate

Line below marks indicates failure in the subject and marks not included in the grand total.

CHANDIGARH
May 16,1958.

sd/---J.R.AGNIHOTRI
REGISTRAR

ATTESTED TO BE A TRUE COPY

SIGNATURE

SEAL

DATED . .1959.

पञ्चमः पाठः

(कर्ता).

बालः धावति ।
बालौ धावतः ।
बालाः धावन्ति ।

ब्राह्मणः वदति ।
शिष्यः पठति ।
नरौ चलतः ।
अश्वौ धावतः ।
मेघाः गर्जन्ति ।
छात्राः नमन्ति ।

फलम् पतति ।
फले पततः ।
फलानि पतन्ति ।

जलम् वहति ।
~~[illegible] [illegible]~~ ।
लक्ष्मणः जयति ।
नेत्रे स्फुरतः ।
मित्रे हसतः ।
कमलानि विकसन्ति ।
पुस्तकानि पतन्ति

अभ्यास

१. नये शब्द :—

बाल — बालक	धाव — दौड़ना
नर — मनुष्य	जीव — जीना
अश्व — घोड़ा	स्फुर — फड़कना
मेघ — बादल	विकस — खिलना
शिष्य — चेला	पत — गिरना

२. रूप लिखिये :—

बालः	बालौ	बालाः	फलम्	फले	फलानि
अश्वः	अश्वौ	अश्वाः	कमलम्	कमले	कमलानि
मेघः	मेघौ	मेघाः	पुस्तकम्	पुस्तके	पुस्तकानि

३. घर का काम :

(क) अनुवाद कीजिये :— १. बादल गरजता है, २. दो घोड़े दौड़ते हैं, ३. शिष्य पढ़ते हैं ४. दो मनुष्य हँसते हैं, ५. फूल गिरता है, ६. आँखें फड़कती हैं ।

(ख) वाक्यों को शुद्ध कर के लिखिये :—
१. अश्वः धावतः, २. पुस्तकानि पतति, ३. शिष्यः पठन्ति, ४. नरौ हसन्ति

S.No..59059

Roll No. 80069

(SEAL)

PANJAB UNIVERSITY

DETAILED MARKS CERTIFICATE FOR PASS CANDIDATES

MATRICULATION EXAMINATION 1958.

Name...Pritam Dass son of Shri Beli Ram

S.NO.	Subjects	Marks obtained	Maximum Marks
1.	English	126	200
2.	Mathematics or Arithmetic & Household Accounts	130	200
3.	i) History	45	90
	ii) Geography	27	60
4.	Science	64	150
5.	Hindi	92	150
	Total	484	

(Four Hundred and eighty four only)

This certificate is valid only if produced along with Original certificate

Line below marks indicates failure in the subject and marks not included in the grand total.

CHANDIGARH
May 16,1958.

sd/---J.R.AGNIHOTRI
REGISTRAR

ATTESTED TO BE A TRUE COPY

SIGNATURE

SEAL

DATED . .1959.

प्रथम: पाठ:

(कर्ता).

बाल: धावति ।
बालौ धावत: ।
बाला: धावन्ति ।

ब्राह्मण: वदति ।
शिष्य: पठति ।
नरौ चलत: ।
अश्वौ धावत: ।
मेघा: गर्जन्ति ।
छात्रा: नमन्ति ।

फलम् पतति ।
फले पतत: ।
फलानि पतन्ति ।

जलम् वहति ।
~~[illegible]~~ ।
लक्ष्मण जयति ।
नेत्रे स्फुरत: ।
मित्रे हसत: ।
कमलानि विकसन्ति ।
पाषाणा पतन्ति

अभ्यास

१. नये शब्द:

बाल — बालक		धाव — दौड़ना	
नर — मनुष्य		गर्ज — गरजना	
अश्व — घोड़ा		स्फुर — फड़कना	
मेघ — बादल		विकस — खिलना	
शिष्य — चेला		पत — गिरना	

२. रूपाणि लिखिये :-

बाल:	बालौ	बाला:	फलम्	फले	फलानि
अश्व:	अश्वौ	अश्वा:	कमलम्	कमले	कमलानि
मेघ:	मेघौ	मेघा:	पाषाणम्	पाषाणे	पाषाणानि

३. घर का काम:

(क) अनुवाद कीजिये:- १. बादल गरजता है, २. दो घोड़े दौड़ते हैं, ३. शिष्य पढ़ते हैं ४ दो मनुष्य हंसते हैं, ५. फूल गिरता है, ६. दोनों आँखें फड़कती हैं।

४. (ख) वाक्यों को शुद्ध कर के लिखिये:-

१. अश्व: धावत:, २. पाषाणानि पतति, ३. शिष्या: पठति, ४. नरौ हसन्ति

From:-

The Headmaster,
BALMOKAND KHATRI HIGH SCHOOL,
(Ghee Mandi)Amritsar.

Dated May 20,1958.

CERTIFIED that Pritam Dass Roll No. 80069 son of Shri Beli Ram matriculated from this school in the year 1958. He secured 484 marks and was placed in the Second Division. He was obedient, respectful and well-behaved. He was a good student and never gave me any chance for complaint. He bore a good moral conduct and character.

He took an active part in games and other extra-mural activities of the school. He comes of a respectable family and his date of birth as per this school record is First October, One Thousand nine hundred and forty (1-10-1940)

Wherever he goes, he carries my good wishes with him.

Sd/---Dev Raj,
Headmaster,
B.K. HIGH SCHOOL,
Ghee Mandi,Amritsar.

Attested to be a true copy

Signature

Seal

Dated . .1959.

तृतीय:
~~सप्तम~~: पाठ:
करण

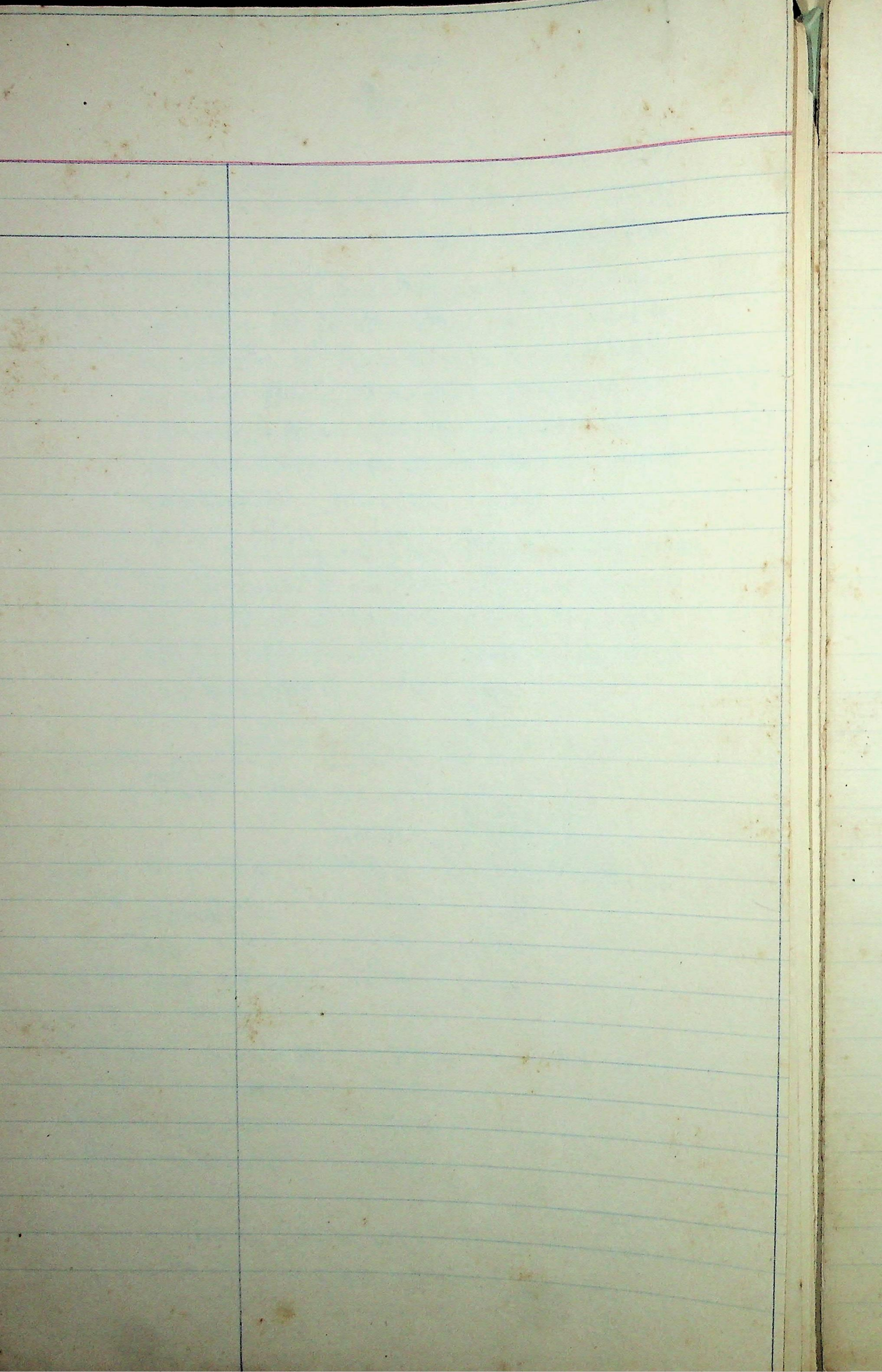
खञ्ज: पादेन चलति।
मनुष्य: पादाभ्याम् चलति।
अश्व: पादै: चलति।
बाल: हस्तेन पत्रम् लिखति।
नर: कर्णाभ्याम् शब्दम् आकर्णयति।
गज: दन्तै: ग्रासम् चर्वति।
वयम् नेत्राभ्याम् पश्याम:।
जलेन जीवनम् भवति।
जीवा: अन्नेन जीवन्ति।
यूयम् कर्णाभ्याम् आकर्णयथ।
मनुष्या: मुखेन वदन्ति खादन्ति च।
किम् गोपाल: नेत्रेण काण: अस्ति?
मोहन: कर्णाभ्याम् बधिर: अपि अस्ति।
कृषक: दात्रेण केदारम् लुनाति।
वृषभौ हलेन क्षेत्रम् कर्षत:।
धनिक: यानेन ग्रामम् गच्छति।
छात्रा: द्विचक्रिका: विद्यालयम् गच्छन्ति।
सूर्येण दीपेन च प्रकाश: भवति।

अभ्यास

1. नये शब्द :- खञ्ज: - लंगड़ा   कृषक: - किसान
पाद - पाँव   वृषभ - बैल
कर्ण - कान   यान - गाड़ी
बधिर - बहिरा   कृष - जोतना
आकर्ण - सुनना। लुनाति (काटना)

2. तीनों रूप लिखिये :- बालेन   बालाभ्याम्   बालै:
रामेण   रामाभ्याम्   रामै:
वानरेण   वानराभ्याम्   वानरै:
फलेन   फलाभ्याम्   फलै:

3. घर का काम :—
अनुवाद करो :— 1. सभी मनुष्य दो पाँवों से चलते हैं।
2. कानों से बहिरा मनुष्य आवाज को नहीं सुनता है।
3. लोग गाड़ियों से गाँव को जाते हैं।
4. राम एक हाथ से खाता है और दोनों हाथों से खाता है।
5. [illegible]



अष्टम: पाठ:

सम्प्रदान

नृप: ब्राह्मणाय धनम् यच्छति।

नृप: ब्राह्मणाभ्याम् धनम् यच्छति।

नृप: ब्राह्मणेभ्य: धनम् यच्छति।

धनम् दानाय परोपकाराय च भवति।

धनिका: ~~सज्जना:~~ याचकेभ्य: अन्नम् यच्छन्ति।

छात्रा: ज्ञानाय विद्यालयम् गच्छन्ति।

बालौ भोजनाय भोजनालयम् धावत:।

अहम् जलाय कूपम् गच्छामि।

कृषक: वृषभाभ्याम् घासम् आनयति।

जनक: पुत्राभ्याम् पुस्तके आनयति।

सज्जना: परोपकाराय एव जीवन्ति।

हिरण्यम् कुण्डलाय भवति।

गृहस्थ: काकेभ्य: बलिम् यच्छति।

परमेश्वराय नम:। शिष्येभ्य: स्वस्ति।

इन्द्राय स्वाहा। ~~अलम्~~ मल्ल: मल्लाय अलम्।

अभ्यास

१. नये शब्द:-

परोपकार - दूसरों की भलाई
याचक - भिखारी
कूपम् - कुआँ
हिरण्यम् - सोना
कुण्डल - कान का आभूषण
अलम् - जोड़ का
स्वाहा - देवताओं का भोजन
दा (यच्छ) - देना
जीव् - जीना

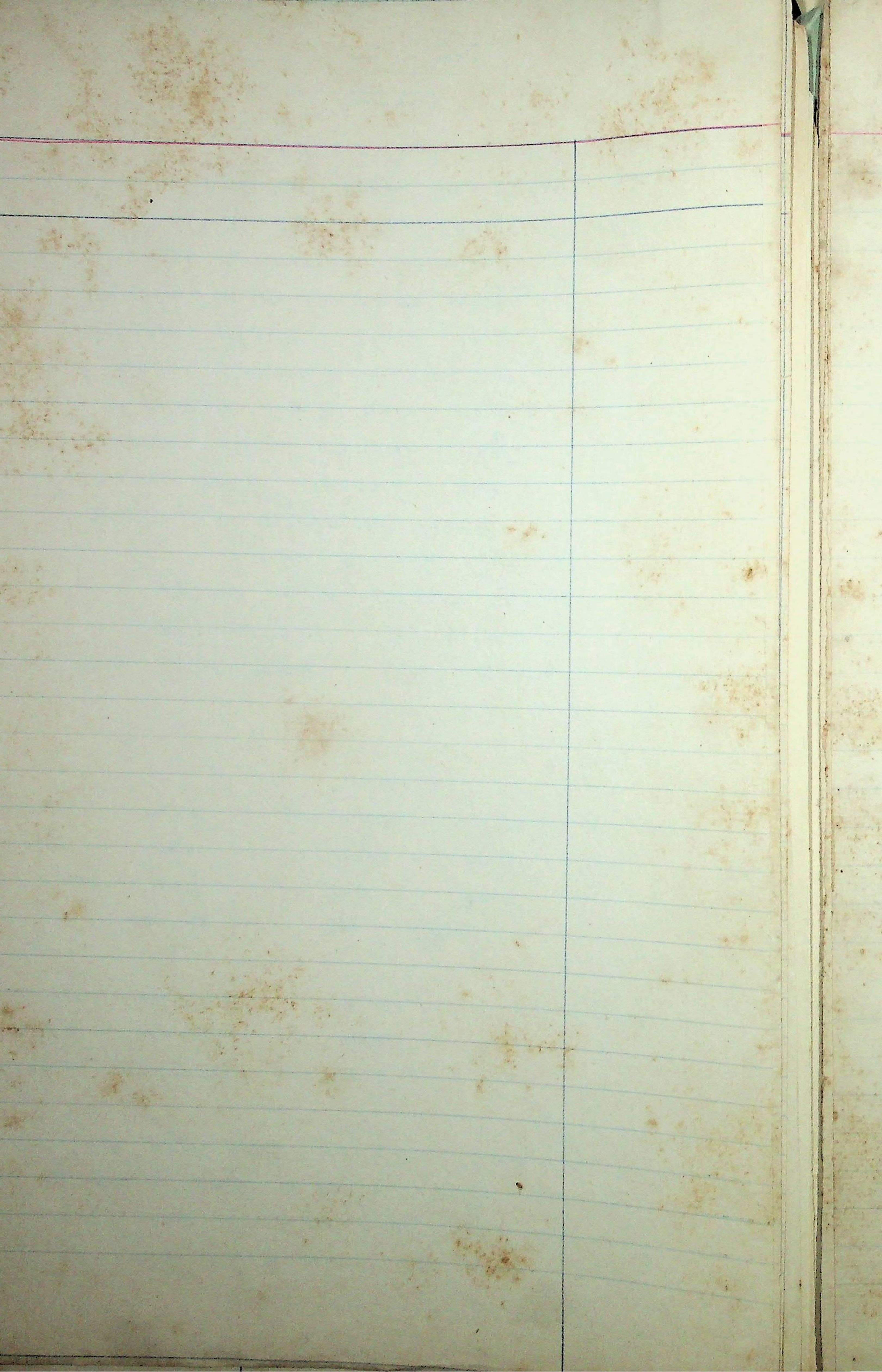
२. तीनों के लिये:-

रामाय रामाभ्याम् रामेभ्य:
फलाय फलाभ्याम् फलेभ्य:
याचकाय याचकाभ्याम् याचकेभ्य:

३. घर का काम:-

(क) वाक्य बनाइये:- बालाभ्याम्, जलाय, धनम्, नम:, स्वाहा।

(ख) अनुवाद कीजिये:- १. वह परोपकार के लिये जीता है। २. हम भोजन के लिये ग्राम को जाते हैं। ३. नौकर घोड़ों के लिये घास लाता है। ४. पिता दो पुत्रों के लिये पुस्तक देता है। ५. धनी लोग भिखारियों को भोजन देते हैं।



नवम: पाठ:

अपादान

वृक्षात् ~~फलम~~ फलानि पतन्ति ।

वृक्षाभ्याम् फलानि पतन्ति ।

वृक्षेभ्य: फलानि पतन्ति ।

बालका: ग्रामात् विद्यालयम् गच्छन्ति ।

अश्वारोही अश्वाभ्याम् पतत: ।

छात्रा: क्रीडनाय नगरात् बहि: धावन्ति ।

अहम् अत्र पठनाय दूरात् आगच्छामि ।

युवाम् भोजनाय ग्रामात् कुत्र गच्छथ: ।

लोका: ग्रामेभ्य: तत्र हवनाय गच्छन्ति ।

नगरेभ्य: अपि लोका: यानै: तत्र गच्छन्ति ।

आरक्षका: लोकान् चौरेभ्य: रक्षन्ति ।

किम् बाला: कूपात् जलम् न आनयन्ति ।

हिमालयात् नद्य: प्रभवन्ति ।

गोमयात् वृश्चिका: भवन्ति ।

नृप: प्रासादात् लोकान् पश्यति

~~[illegible]~~ चैत्रात् पूर्व: फाल्गुन: भवति

पथिका: ग्रामात् ग्रामम् गच्छन्ति ।

अभ्यास

१. नये शब्द :- अश्वारोह - घुड़सवार   गोमय - गोबर

क्रीडन - खेल   वृश्चिक - बिच्छू

आरक्षक - सिपाही   प्रासाद - महल

नद - बड़ी नदी   प्रभू - उत्पन्न होना

२. शब्दों के रूप :- वृक्षात् वृक्षाभ्याम् वृक्षेभ्य:

अश्वात् अश्वाभ्याम् अश्वेभ्य:

ग्रामात् ग्रामाभ्याम् ग्रामेभ्य:

३. अभ्यास :- (क) रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिये :- १. अश्वारोह: ---- पतति । २. वृक्षेभ्य: फलानि ---- न पतन्ति । ३. किम् ~~बाल~~: ---- जलम् न आनयन्ति? ४. ---- वृश्चिका भवन्ति । ५. वयम् ---- नगरम् गच्छाम: ।

(ख) अनुवाद कीजिये :- सिपाही लोगों को चोरों से रक्षा करते हैं । फागुन चैत से पहिले आता है । छात्र पढ़ने के लिये दूर से यहाँ आते हैं । ग्राम से बाहर विद्यालय है । भोजनालय बाजार से दूर नहीं है ।



दशम: पाठ:

सम्बन्ध

काकस्य वर्ण: कृष्ण: भवति।
काकयो: वर्ण: कृष्ण: भवति।
काकानाम् वर्ण: कृष्ण: भवति।
शुकानाम् वर्ण: हरित: भवति।
बकानाम् वर्ण: श्वेत: भवति।
~~[illegible]~~ मयूरस्य वर्ण: नील: भवति।
आम्रस्य वर्ण: पीत: भवति।
कूपस्य जलम् मधुरम् भवति।
समुद्रस्य जलम् क्षारम् भवति।
~~नृपस्य सेवका: लोकान् रक्षन्ति।~~
बालकानाम् चौरेभ्य: भयम् भवति।
सज्जनानाम् दुर्जनेभ्य: भयम् भवति
नृपस्य सेवका: लोकान् रक्षन्ति।
हस्तयो: दश नखा: भवन्ति।
भारतम् बहूनाम् कृषकाणाम् देश: अस्ति।
बालका: फलानाम् रसम् पिबन्ति।
निर्धना: कूपस्य शीतलम् जलम् पिबन्ति।
पिकानाम् गीतानि मधुराणि भवन्ति।
कपोतस्य पक्षौ कोमलौ भवत:।
संसारस्य जनक: परमेश्वर: अस्ति।

अभ्यास

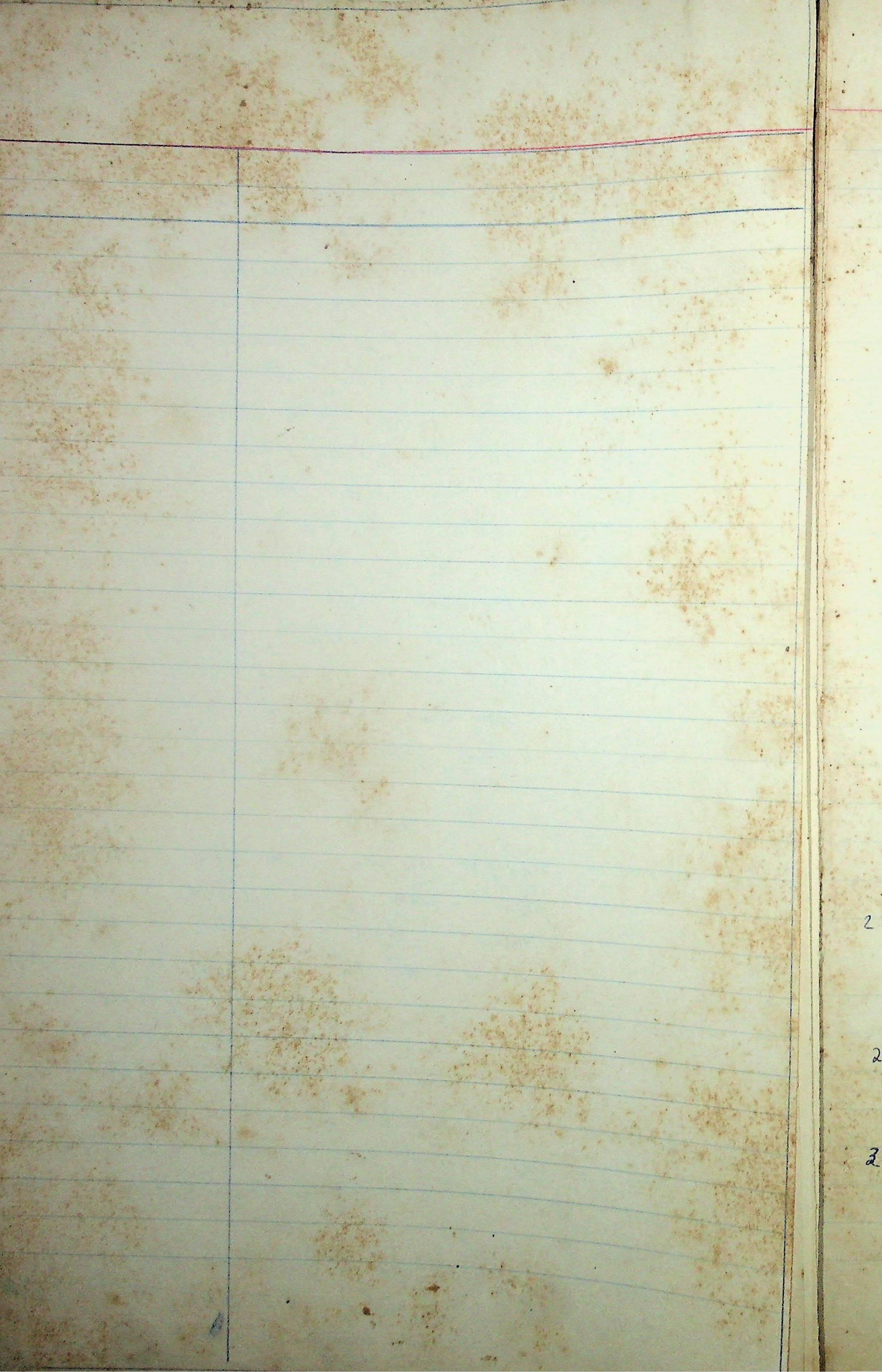
2. नवशब्दा:— काक — कौआ   कृष्ण: — काला
शुक — तोता   हरित — हरा
बक — बगुला   नील: — नीला
कपोत — कबूतर   पीत: — पीला
पिक — कोयल   क्षारम् — खारा   अस्ति — है

2. सम्बन्ध के रूप :--

काकस्य	काकयो:	काकानाम्
रामस्य	रामयो:	रामाणाम्
फलस्य	फलयो:	फलानाम्

3. घर का काम :- (क) रिक्तस्थानों की पूर्ति कीजिये :-
1. .... वर्ण: हरित: भवति। 2. बालका: .... रसम् ...
3. पिकानाम् .... मधुराणि भवन्ति। 4. सज्जनानाम् .... भयम् ....।
4. हस्तयो: .... नखा: भवन्ति।

(ख). 1. हम दो कूएं का ठंडा जल पीते हैं। 2. राम का पिता भोजन खाता है।
3. फलों का रस मीठा होता है। 4. ~~[illegible]~~ बगुले का रंग काला नहीं होता है।
4. क्या ~~[illegible]~~ दोनों कौवों का रंग काला नहीं है?



दशमः पाठः

सम्बन्धः

काकस्य वर्णः कृष्णः भवति ।

काकयोः वर्णः कृष्णः भवति ।

काकानाम् वर्णः कृष्णः भवति ।

शुकानाम् वर्णः हरितः भवति ।

बकानाम् वर्णः श्वेतः भवति ।

~~[illegible]~~ मयूरस्य वर्णः नीलः भवति ।

श्यामस्य वर्णः पीतः भवति ।

कूपस्य जलम् मधुरम् भवति ।

समुद्रस्य जलम् क्षारम् भवति ।

~~नृपस्य सेवकाः लोकान् रक्षन्ति~~ ।

धनिकानाम् चौरस्य भयम् भवति ।

सज्जनानाम् दुर्जनस्य भयम् भवति

नृपस्य सेवकाः लोकान् रक्षन्ति ।

हस्तयोः दश नखाः भवन्ति ।

भारतम् वर्षम् कृषकाणाम् देशः अस्ति ।

धनिकाः फलानाम् रसम् पिबन्ति ।

निर्धनाः कूपस्य शीतलम् जलम् पिबन्ति ।

पिकानाम् गीतानि मधुराणि भवन्ति ।

कपोतस्य पक्षौ कोमलौ भवतः ।

संसारस्य जनकः परमेश्वरः अस्ति ।

अभ्यास

1. नये शब्द :—

काक	कौवा	कृष्ण	काला
शुक	तोता	हरित	हरा
बक	बगुला	नीलः	नीला
कपोत	कबूतर	पीतः	पीला
पिक	कोयल	क्षारम्	खारा
		अस्ति	है

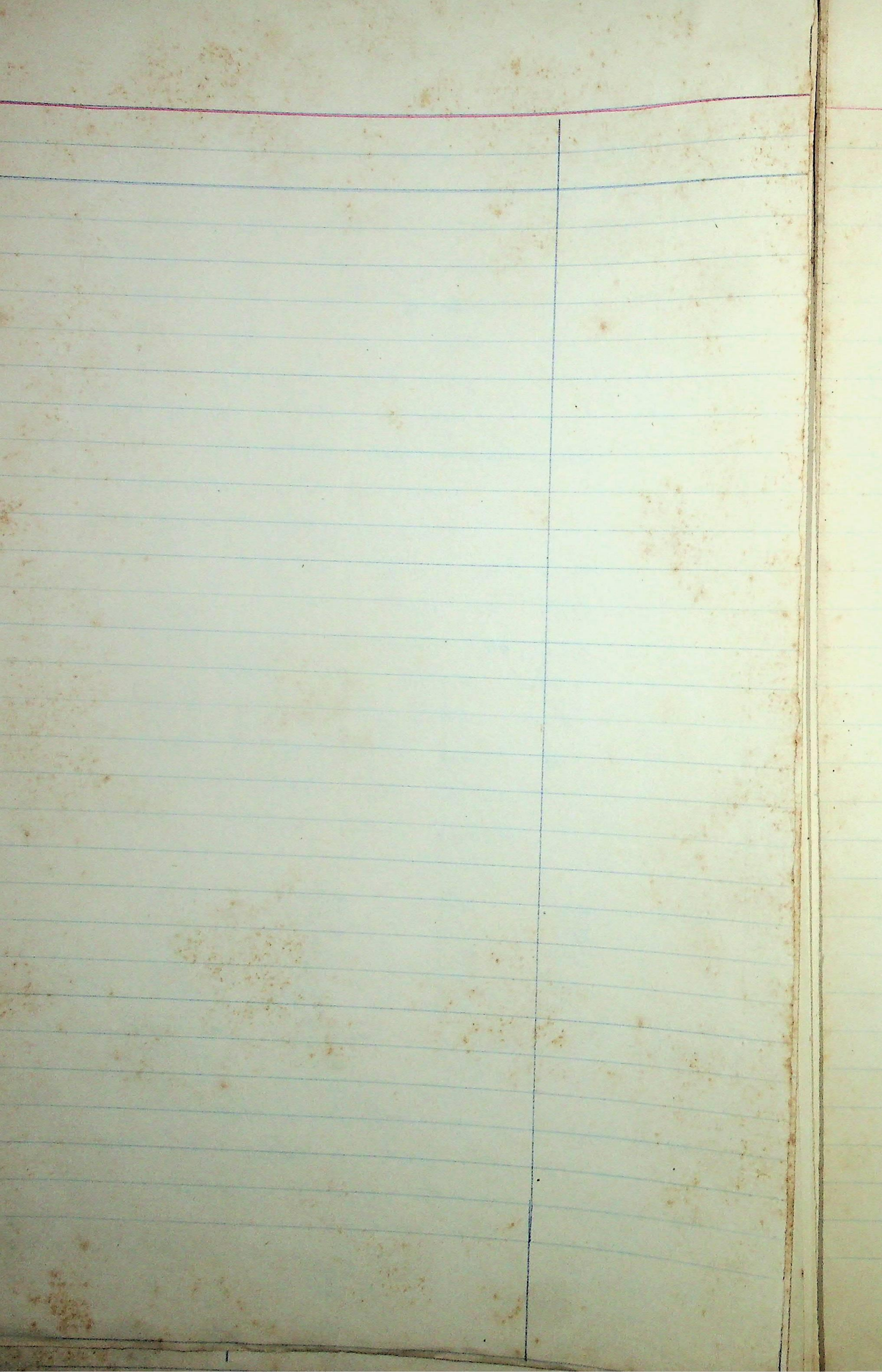
2. [illegible] कीजिये :—

काकस्य	काकयोः	काकानाम्
रामस्य	रामयोः	रामाणाम्
फलस्य	फलयोः	फलानाम्

3. पद का काम :— (क) रिक्तस्थानों की पूर्ति कीजिये :—

1. ---- वर्णः हरितः भवति । 2. धनिकाः ---- रसम् ---
3. पिकानाम् ---- मधुराणि भवन्ति । 4. सज्जनानाम् ---- भयम् ---- ।
5. हस्तयोः ---- नखाः भवन्ति ।

(ख) 1. इन दो कूएं का ठंडा जल पीते हैं । 2. राम का पिता भोजन खाता है ।
3. फलों का रस मीठा होता है । 4. कबूतर का रंग काला नहीं होता है ।
5. क्या दोनों कौवों का रंग काला नहीं है ?



एकादश: पाठ:

व्याकरण

फलानि वृक्षे सन्ति ।
फलानि वृक्षयो: सन्ति ।
फलानि वृक्षेषु सन्ति ।

शुक: पञ्जरके अस्ति ।
शुकौ पञ्जरकयो: स्त: ।
शुका: पञ्जरकेषु सन्ति ।

वने सिंहा: वसन्ति । मृगा: अपि तत्र वसन्ति । मीना: नदेषु वसन्ति । ग्रीष्मे कूपानाम् जलम् शीतलम् भवति । तडागानाम् जलम् शिशिरे शीतलम् भवति । वसन्ते पुष्पाणि विकसन्ति । पुष्पेषु मधुरम् रसम् भ्रमरा: पिबन्ति । बालका: ग्रीष्मे हिमजलम् पिबन्ति । ~~कृ~~ कृषका: हेमन्ते इक्षुदण्डानाम् रसम् पिबन्ति । मम हस्तयो: पुस्तके स्त: । किम् तव नयनयो: तृणानि सन्ति ?

सूर्य: आकाशे भ्रमति । चन्द्र: अपि आकाशे भ्रमति । मृगा: तडागस्य तटे जलम् पिबन्ति । मनुष्या: गृहेषु वसन्ति, ~~मृगा~~ खगा: नीडेषु, सर्पा: च बिलेषु । दुग्धं घृतम् भवति । कलियुगे संघे बलम् अस्ति ।

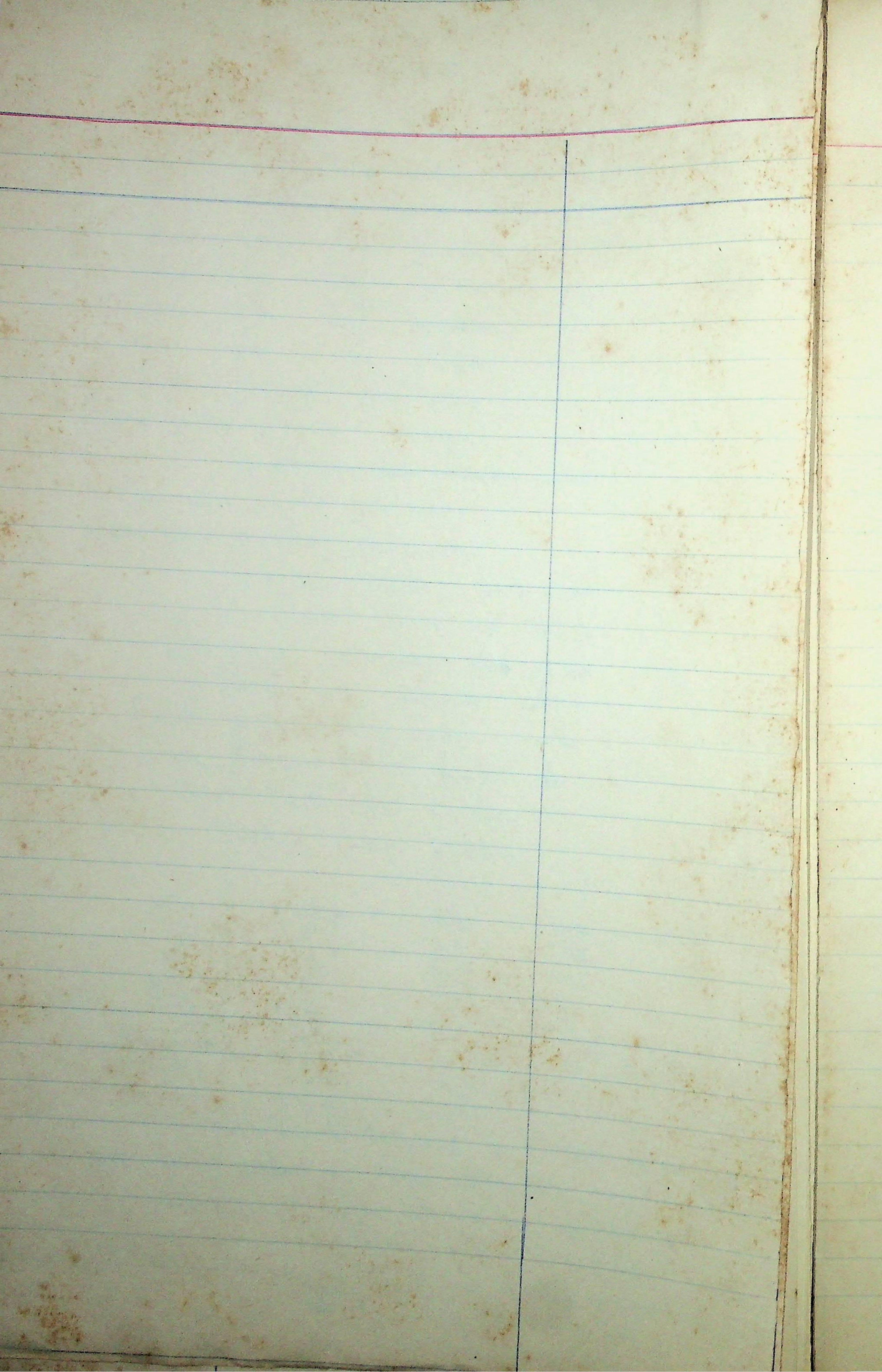
अभ्यास

१. नये शब्द:- पञ्जरक - पिंजरा   नीड - घोंसला
मीन - मछली   स्त: - (वे दो) हैं
हिम - बर्फ   सन्ति - (वे सब) हैं
इक्षुदण्ड - गन्ना   वि/कस - खिलना
मम - मेरा
तव - तेरा

२. निम्न के रूप लिखिये:-
वृक्षे   वृक्षयो:   वृक्षेषु
नरे   नरयो:   नरेषु
फले   फलयो:   फलेषु

३. घर का काम :- (क) शब्दों का वाक्यों में प्रयोग कीजिये:
बिलेषु, ग्रीष्मे, विकसन्ति, हिमजलम्, हस्तयो: ।

(ख) अनुवाद कीजिये:-
१. शिव हिमालय पर रहता है । २. क्या पक्षी घोंसलों में नहीं रहते ? ३. मेरे पिताजी अम्बालानगर में रहते हैं । ४. पञ्जाब प्रदेश के लोग संसार में प्रसिद्ध हैं । ५. ~~यात्री~~ पथिक सड़क पर चलते हैं । ६. ग्रामों में लोग सज्जन होते हैं ।



एकादशः पाठः

अधिकरण

फलानि वृक्षे सन्ति ।
फलानि वृक्षयोः सन्ति ।
फलानि वृक्षेषु सन्ति ।

शुकः पञ्जरके अस्ति ।
शुकौ पञ्जरकयोः स्तः ।
शुकाः पञ्जरकेषु सन्ति ।

वने सिंहाः वसन्ति । मृगाः अपि तत्र वसन्ति । मीनाः नदेषु वसन्ति । ग्रीष्मे कूपानाम् जलम् शीतलम् भवति । तडागानाम् जलम् शिशिरे शीतलम् भवति । वसन्ते पुष्पाणि विकसन्ति । पुष्पेषु मधुरम् रसम् भ्रमराः पिबन्ति । बालिकाः ग्रीष्मे हिमजलम् पिबन्ति । ~~[illegible]~~ कृषकाः हेमन्ते इक्षुदण्डानाम् रसम् पिबन्ति । मम हस्तयोः पुस्तके स्तः । किम् तव नयनयोः तृणानि सन्ति ?

सूर्यः आकाशे भ्रमति । चन्द्रः अपि आकाशे भ्रमति । मृगाः तडागस्य तटे जलम् पिबन्ति । मनुष्याः गृहेषु वसन्ति, ~~[illegible]~~ खगाः नीडेषु, सर्पाः च बिलेषु । द्वापरे द्यूतम् भवति । कलियुगे संघे बलम् अस्ति ।

अभ्यास

१. नये शब्द :-

मम - मेरा, तव - तेरा	पञ्जरक - पिंजरा	नीड - घोंसला
	मीन - मछली	स्तः - (वे दो) हैं
	हिम - बर्फ	सन्ति - (वे सब) हैं
	इक्षुदण्ड - गन्ना	वि+कस - खिलना

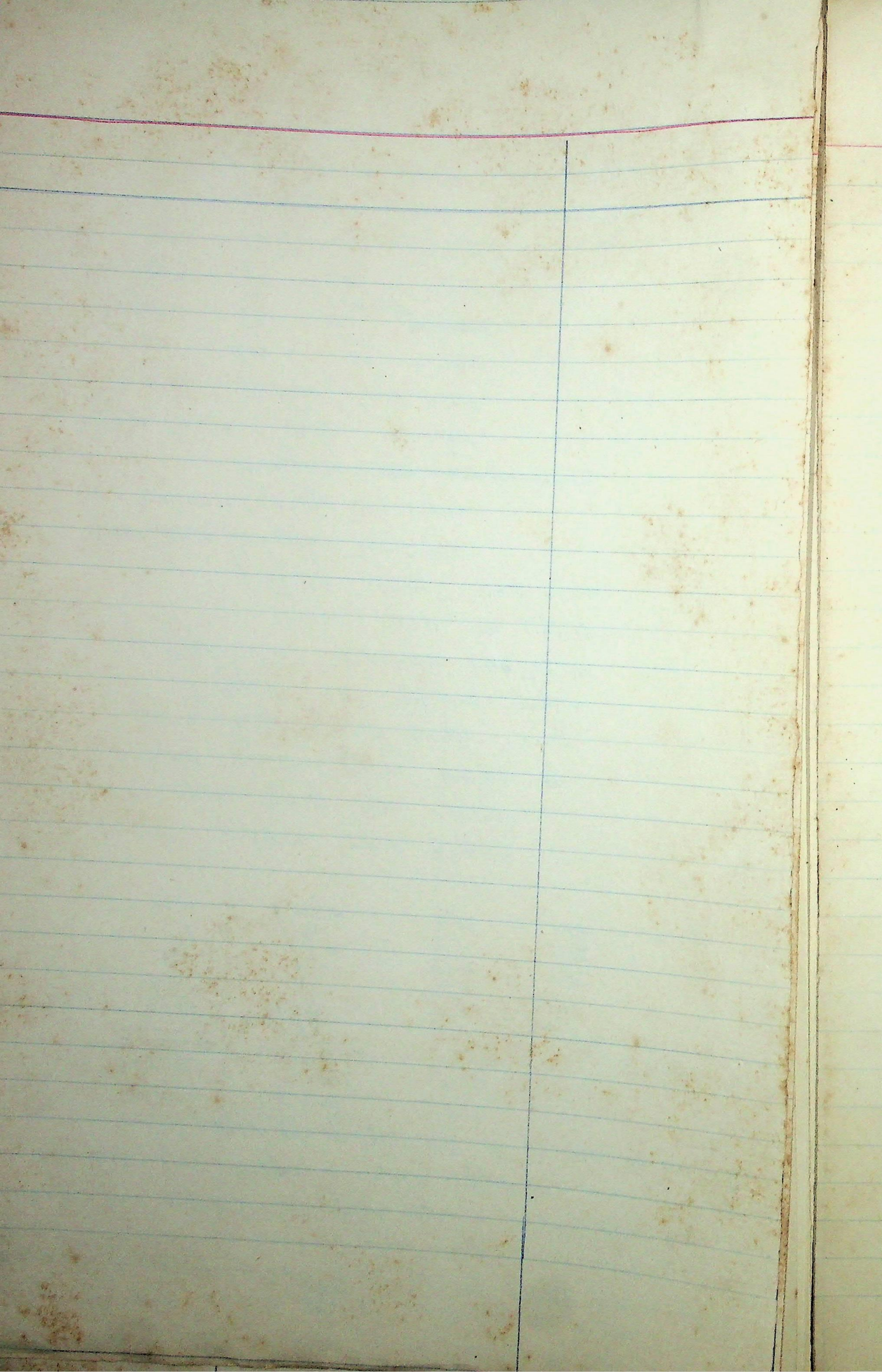
२. स्मरण करने के लिये :-

वृक्षे	वृक्षयोः	वृक्षेषु
नरे	नरयोः	नरेषु
फले	फलयोः	फलेषु

३. घर का काम :- (क) शब्दों का वाक्यों में प्रयोग ~~कीजिये~~
बिलेषु, ग्रीष्मे, विकसन्ति, हिमजलम्, हस्तयोः ।

(ख) अनुवाद कीजिये :-

१. शिव हिमालय पर रहता है । २. क्या पक्षी घोंसलों में नहीं रहते ? ३. मेरे पिताजी अम्बालानगर में रहते हैं । ४. पञ्जाब प्रदेश के लोग संसार में प्रसिद्ध हैं । ५. ~~यात्री~~ पथिक सड़क पर चलते हैं । ग्रामों में लोग सज्जन होते हैं ।



एकादश: पाठ:

अभिकरण

फलानि वृक्षे सन्ति ।

फलानि वृक्षयो: सन्ति ।

फलानि वृक्षेषु सन्ति ।

शुक: पञ्जरके अस्ति ।

शुकौ पञ्जरकयो: स्त: ।

शुका: पञ्जरकेषु सन्ति ।

वने सिंह: वसति । मृगा: अपि तत्र वसन्ति । मीना: नदेषु वसन्ति । ग्रीष्मे कूपानाम् जलम् शीतलम् भवति । तडागानाम् जलम् शिशिरे शीतलम् भवति । वसन्ते पुष्पाणि विकसन्ति । पुष्पेषु मधुरम् रसम् भ्रमरा: पिबन्ति । बालिका: ग्रीष्मे हिमजलम् पिबन्ति । ~~बा~~ बालका: हेमन्ते इक्षुदण्डानाम् रसम् पिबन्ति । मम हस्तयो: पुस्तके स्त: । किम् तव नयनयो: तृणानि सन्ति ?

सूर्य: आकाशे भ्रमति । चन्द्र: अपि आकाशे भ्रमति । मृगा: तडागस्य तटे जलम् पिबन्ति । मनुष्या: गृहेषु वसन्ति, ~~मृग~~ खगा: नीडेषु, सर्पा: च बिलेषु । द्रव्ये भूतम् भवति । कलियुगे संघे बलम् अस्ति ।

अभ्यास

१. नये शब्द :- पञ्जरक - पिंजरा | नीड - घोंसला

मीन - मच्छ | स्त: - (बैठा) हैं।

मम - मेरा, तव - तेरा | हिम - बर्फ | सन्ति - (बैठव) हैं

इक्षुदण्ड - गन्ना | वि ✓ कस् - खिलना

२. निम्नों के लिये :- वृक्ष वृक्षयो: वृक्षेषु

नर नरयो: नरेषु

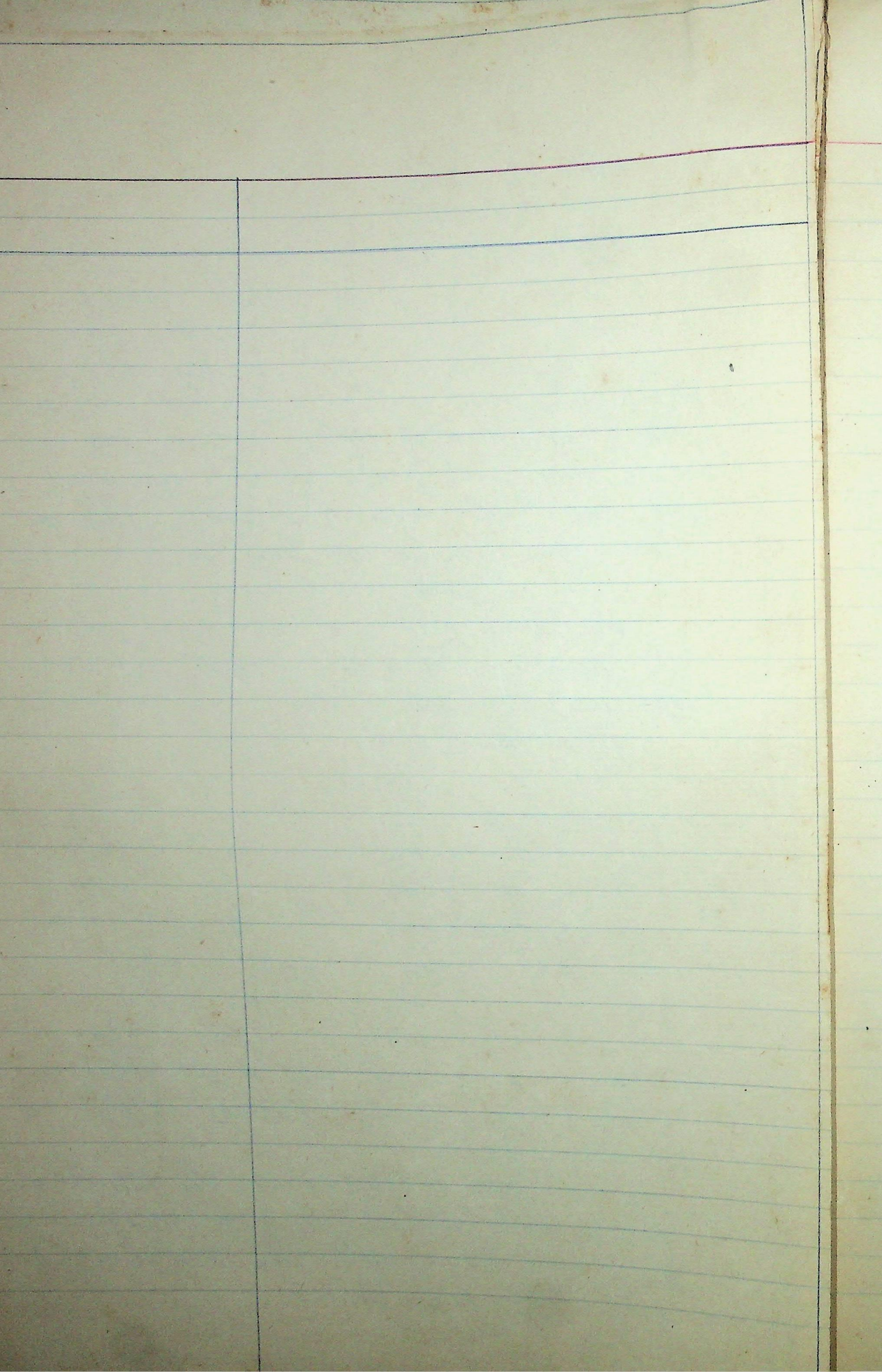
फल फलयो: फलेषु

३. घर का काम :- (क) शब्दों का वाक्यों में प्रयोग कीजिये :-

बिलेषु, ग्रीष्मे, विकसन्ति, हिमजलम्, हस्तयो: ।

(ख) अनुवाद कीजिये :-

१. शिव हिमालय पर रहता है । २. क्या पक्षी घोंसलों में नहीं रहते ? ३. मेरे पिता जी अम्बालानगर में रहते हैं । ४. पञ्जाब प्रदेश के लोग संसार में प्रसिद्ध हैं । ५. ~~यात्री~~ पथिक सड़क पर चलते हैं । ग्रामों में लोग सज्जन होते हैं ।



द्वादश: पाठ:

(सम्बोधन, अव्यय)

श्याम: — हे ~~स~~ राम! तव विद्यालय: कुत्र अस्ति?

राम: — मित्र श्याम! मम विद्यालय: ग्रामे अस्ति। अहम् तत्र प्रतिदिनम् पठनाय गच्छामि। मम सहोदर: अपि तत्र एव पठति यत्र अहम् पठामि।

श्याम: — भो राम! त्वम् ~~पाठशालाम्~~ विद्यालयम् कथम् गच्छसि? पादाभ्याम् यानेन वा?

राम: — हे श्याम! यथा त्वम् पादाभ्याम् एव विद्यालयम् गच्छसि, तथा एव अहम् अपि पादाभ्याम् एव विद्यालयम् गच्छामि। परन्तु अद्य अहम् यानेन एव विद्यालयम् गच्छामि। भो श्याम! त्वम् कदा विद्यालयम् गच्छसि?

श्याम: — मित्र! अहम् प्रातः विद्यालयं गच्छामि। मध्याह्ने यदा घण्टानाद: भवति तदा अहम् गृहम् प्रति आगच्छामि। अधुना अहम् ~~पाठशालाम्~~ विद्यालयम् एव गच्छामि। (यज्ञदत्त: सोमदत्त: देवदत्तश्च अपि आगच्छन्ति)।

राम: श्याम: च — हे बाला:! किम् यूयम् अधुना विद्यालयम् गच्छथ?

बाला: — भो बालौ! वयम् अद्य ~~पाठशालाम्~~ विद्यालयं न गच्छाम:। अस्माकम् विद्यालये अद्य अवकाश: अस्ति। वयम् तु क्रीडनाय क्रीडाक्षेत्रम् गच्छाम:।

※ P.T.O.

अभ्यास

1. नये शब्द:-

कुत्र – कहाँ	कदा – कब
यत्र – जहाँ	यदा – जब
तत्र – वहाँ	तदा – तब
कथं – कैसे	अधुना – अब
यथा – जैसे	अद्य – आज
तथा – वैसे	अस्माकम् – हमारा
	मध्याह्न – दोपहर

2. सम्बोधन के लिये

हे राम! हे रामौ! हे रामा:!

भो बाल! भो बालौ! भो बाला:!

3. रचना कार्य:— (क) वाक्यों में प्रयोग कीजिये:— अद्य, कथम्, तदा, यथा, कुत्र, अधुना।

(ख) अनुवाद कीजिये:— जब शीतकाल आजाता है तो जल ठंडा हो जाता है। आज आकाश में बादल हैं। तुम दो नये पाठों को पढ़ते हो। जब राम पढ़ता है तो श्याम लिखता है। जैसे [illegible]

यस्मात् च येन च यथा च यत् च
यावत् च यत्र च शुभाशुभम् आत्मकर्म ।
तस्मात् च तेन च तथा च तदा च तत् च
तावत् च तत्र च विधातृवशाद् उपैति ॥

त्रयोदश: पाठ:
लोट् लकार

राम: पाठम् पठतु ।
सा पत्रम् लिखतु
मोहन: शोभन: च ग्रामम् गच्छताम् ।
तौ पाठम् पठताम् पत्रं च लिखताम् ।
पशव: घासम् खादन्तु वृषभा: च जलम् पिबन्तु ।
ता: विद्यालयम् गच्छन्तु पाठम् च स्मरन्तु ।
सत्यम् वद, धर्मम् चर, पाठम् स्मर ।
युवाम् गृहम् गच्छतम् जनकम् च नमतम् ।
यूयम् अत्र आगच्छत उपदेशम् च आकर्णयत ।
हे चौरा: ! यूयम् परधनम् न हरत ।
हे शिष्या: ! यूयम् कदा अपि अनृतम् न वदत ।
किम् अहम् अधुना गृहम् गच्छानि, पाठम् वा पठानि ?
गुरुवर ! किम् अहम् अन्त: ~~आगच्छानि~~ आगच्छानि?
किम् आवाम् भोजनम् खादाव ?
किम् वयम् अपि चित्रम् पश्याम ?
लोका: सुखेन वसन्तु भद्राणि च पश्यन्तु ।
देशस्य नागरिका: धार्मिका: भवन्तु ।
यूयम् पुष्पाणाम् गन्धम् न जिघ्रत ।

अभ्यास

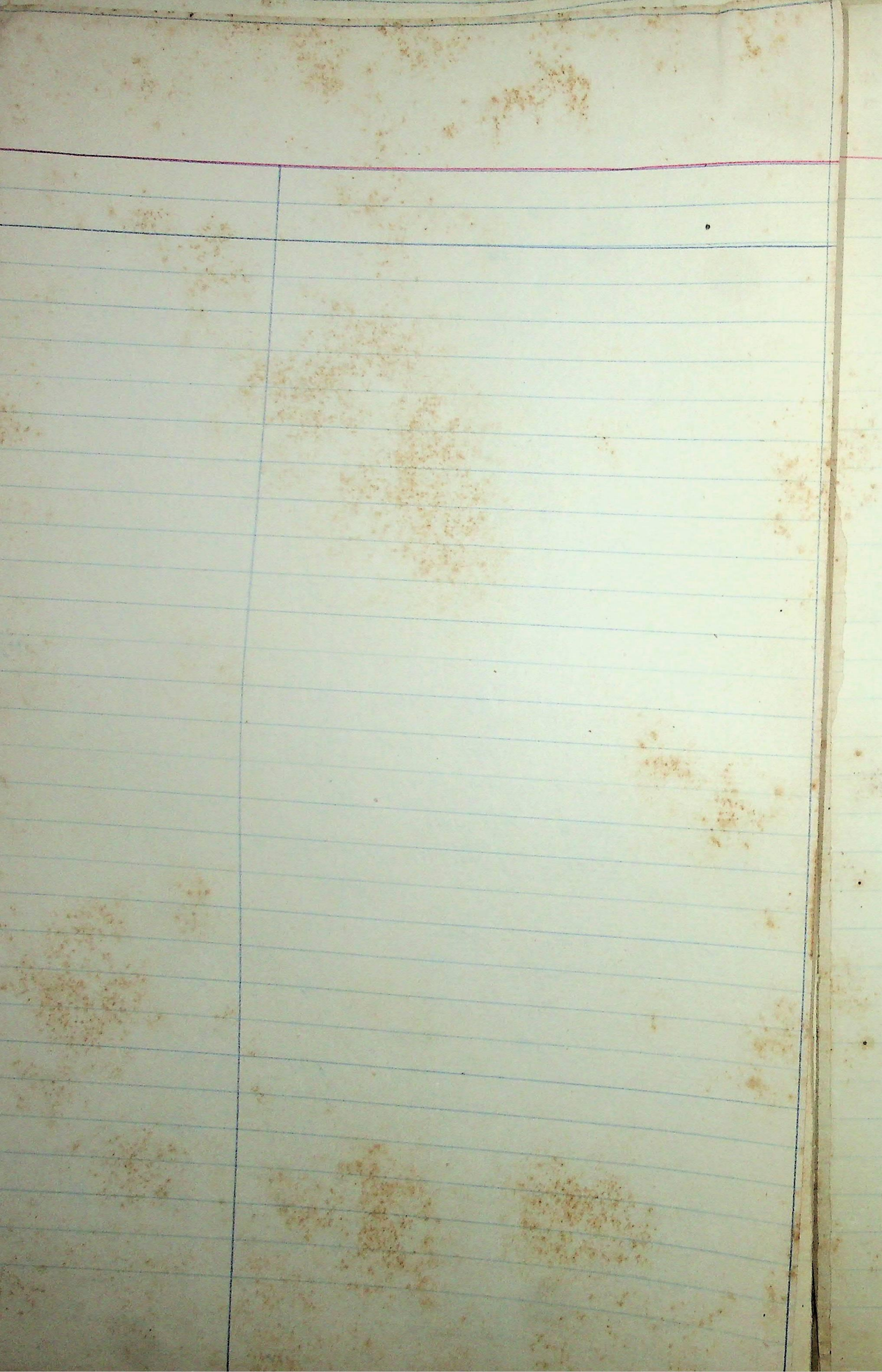
१. नये शब्द :- कदा कभी (हृ) हर - चुराना
अनृतम् झूठ (घ्रा) जिघ्र सूंघना
अन्त: अन्दर वा - या
भद्र कल्याण

२. लकारों के रूप :-

पठतु	पठताम्	पठन्तु
पठ	पठतम्	पठत
पठानि	पठाव	पठाम

३. घर का काम :- (क) अनुवाद कीजिये :- 1. हे बालको ! तुम विद्यालय जाओ। 2. संसार के सब लोग सुख से रहें। 3. बन्दर वृक्षों पर बैठें और फल खायें। 4. शेर वन में गर्जें और मोर नाचें। 5. क्या हम आज नगर को न जायें? 6. वे दोनों गुरु को नमस्कार करें।

(ख) ~~[illegible]~~ हिन्दी में अनुवाद कीजिये : 1- किम् अहम् पाठम् पठतु ? 2 युवाम् गृहम् गच्छत 3. तौ: अनृतम् न वदताम् ।



चतुर्दशः पाठः

तयोः गृहम् पाठशालायाः दूरे न अस्ति।

द्वे कन्ये

(आकारान्त स्त्रीलिङ्ग)

द्वे कन्ये स्तः। एका कमला अस्ति द्वितीया च विमला। उभे प्रतिदिनम् कन्याभिः सह पाठशालाम् गच्छतः। तत्र पाठशालायाम् कन्याः वृक्षाणाम् छायायाम् निजपाठान् स्मरन्ति। ~~सन्ध्यायाम्~~ कमला विमला च ~~[illegible]~~ क्रीडायै क्रीडाक्षेत्रम् गच्छतः। तत्र खेलतः धावतः च। ~~क्रीडाभिः तयोः ... सुखम् भवति~~। तत्र ~~[illegible]~~ बालिकाः शिलायाम् उपविश्य कन्यानाम् क्रीडाम् पश्यन्ति। क्रीडया तासाम् आनन्दम् सुखम् च भवति।

रविवारे बालिकाः उद्यानम् गच्छन्ति। उभे कन्ये अपि ताभिः सह तत्र गच्छतः। विमला मालाम् करोति, कमला पुष्पाणि जिघ्रति। उद्याने एका ~~[illegible]~~ कुल्या अपि अस्ति। ~~[illegible]~~ कुल्यायाः जलम् शीतलम् मधुरम् च अस्ति। कन्याः जलस्य धारायाम् न प्रविशन्ति। ताः ~~[illegible]~~ लतासु भ्रमरान् पश्यन्ति। यदा शुष्काणि पत्राणि सरितायाम् पतन्ति तदा ताः प्रसीदन्ति। हे कमले! तत्र जलम् न प्रविश। हे बालिकाः! यूयम् पुष्पाणि न स्पृशत।

अभ्यास

1. नये शब्द:-

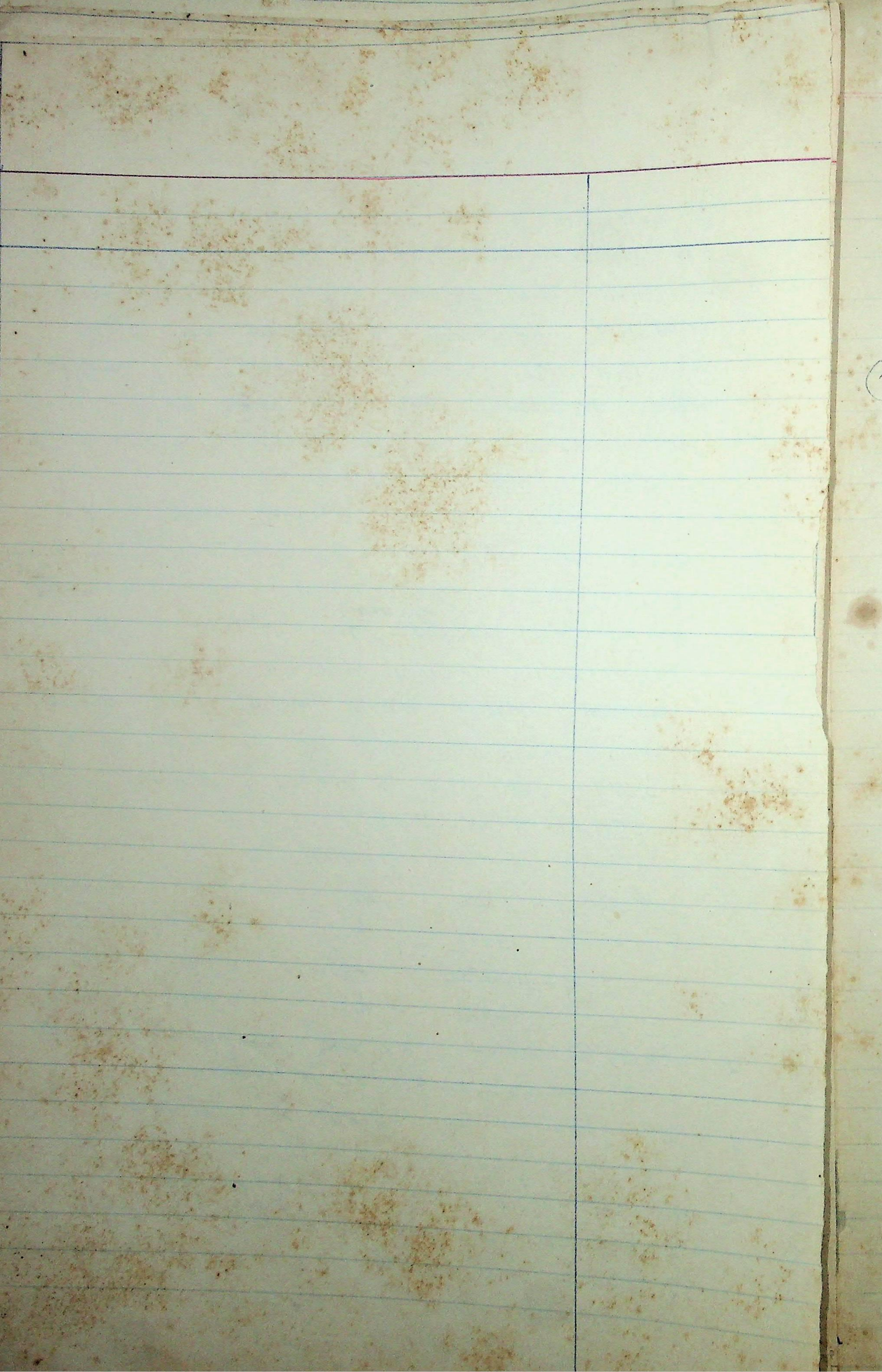
उद्यान	बाग	प्रसीद	प्रसन्न होना
उभ	दोनों	स्पृश	छूना
कुल्या ~~सरिता~~	~~नदी~~ नहर	प्र √विश्	प्रवेश करना
भ्रमर	भौंरा	उपविश्य	बैठकर

2. समझने के लिये:- लता ~~शब्द~~ (आकारान्त स्त्रीलिङ्ग) के रूप व्याकरण परिशिष्ट में देखिये।

3. घर का काम:- (क) वाक्यों में प्रयोग कीजिये:-

गङ्गायाम्, लतासु, पाठशालाम्, कन्याभिः, क्रीडाभिः

(ख) अनुवाद कीजिये:- 1. गङ्गा और यमुना प्रयाग में मिलती हैं। 2. बालक वृक्षों की छाया में बैठकर विद्या को पढ़ते हैं। 3. उद्यान में बेलों पर भौंरे मंडराते हैं। 4. राम सीता के लिये हिरण को लाता है। 5. सब कन्यायें पाठशाला को जायें और अपने पाठ को पढ़ें।



परस्मैपद: पाठ:

दिवादिगण

निशायाम् आकाशे तारकाः दीप्यन्ति । ईश्वरस्य कृपया दुःखानि नश्यन्ति चित्तम् च शाम्यति । वर्षासु वने मयूराः नृत्यन्ति । ग्रीष्मे सरोवराणाम् जलम् शुष्यति । जनकः पुत्रेभ्यः क्रुध्यति । बालिकाः चौरेभ्यः त्रस्यन्ति, सज्जनाः दुर्जनेभ्यः कुप्यन्ति । द्वे कन्ये वस्त्राणि सीव्यतः । जलैः गात्राणि शुध्यन्ति, मनः सत्येन शुध्यति । नृपाः दुष्टान् न क्षाम्यन्ति । (N. Para.) यूयम् कार्यकाले न मुह्यत । नित्यप्रति, उद्याने भ्राम्याम वनस्य शोभाम् च पश्याम । श्वानाः शुनैः कायः तुष्यति । वयम् न कदापि लुभ्याम । हे पुत्र ! त्वम् न कदापि लुभ्य, लोभः दुःखस्य कारणम् भवति । किम् त्वम् पापान् क्षाम्यसि ? हे राम ! प्रजानाम् दुःखानि नश्यन्तु, प्रजाः च तुष्यन्तु । किम् युवाम् सरितायाः तटे भ्राम्यथः ?

नित्य प्रति ।

1. नये शब्द :- दिव् (दीव्) - चमकना, नश् - नष्ट होना, शम् (शाम्) शान्त होना, शुष् सूखना, त्रस् - डरना, सिव् (सीव्) - सीना, क्षम् (क्षाम्) - क्षमा करना, तुष - प्रसन्न होना, लुभ् - लोभ करना

2. स्मरण कीजिये :-

दीव्यति	दीव्यतः	दीव्यन्ति
दीव्यसि	दीव्यथः	दीव्यथ
दीव्यामि	दीव्यावः	दीव्यामः

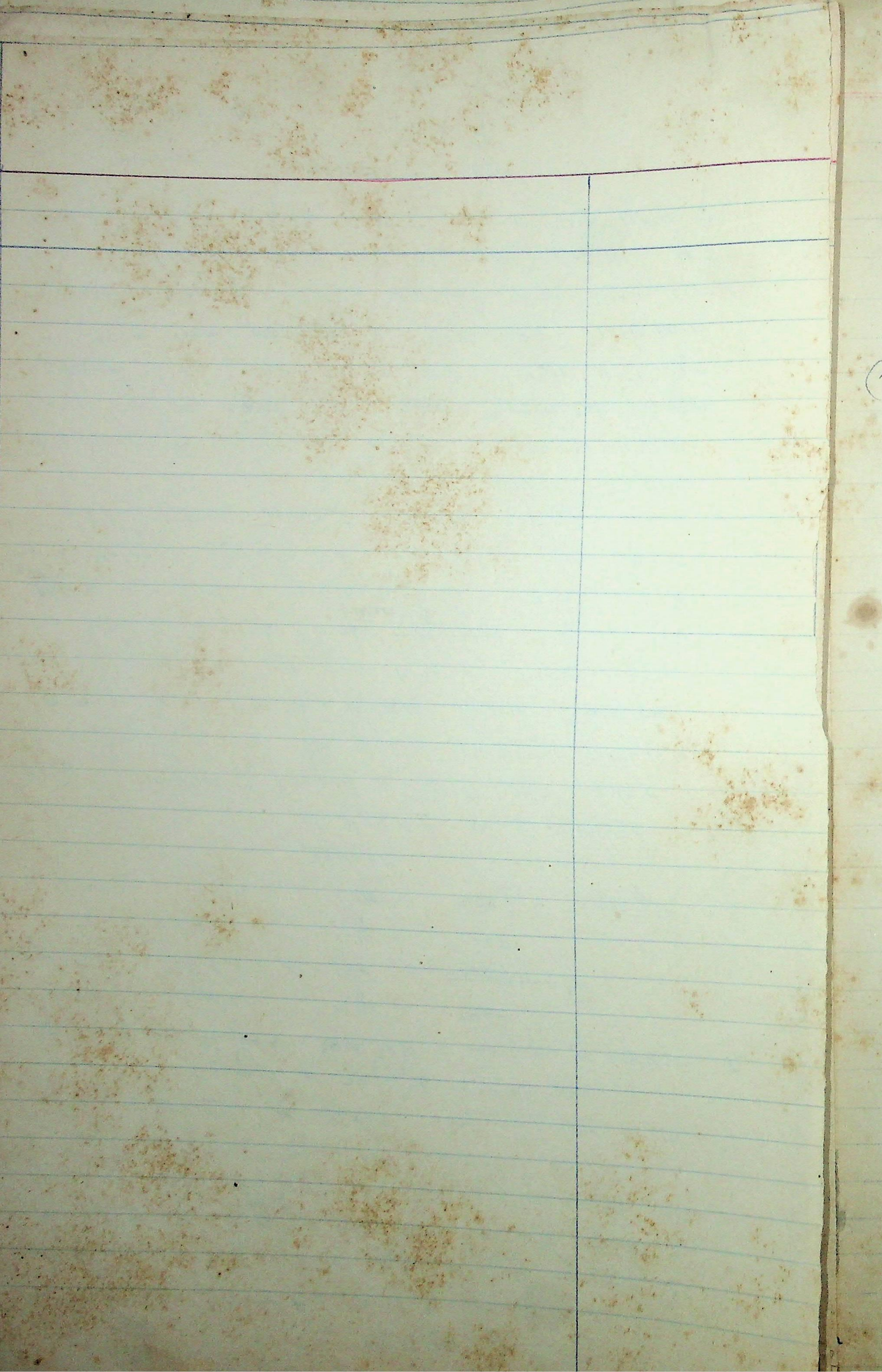
3. घर का काम :-

(क). रिक्त स्थानों की पूर्ति करो :-

1. निशायाम् तारकाणि ------ । 2. सज्जनाः दुर्जनेभ्यः ------ । 3. पिता ------ क्रुध्यति । 4. मनः ------ शुध्यति । 5. नृपाः ------ न क्षाम्यन्ति ।

(ख) अनुवाद कीजिये :-

1. तुम नित्य कहाँ घूमते हो ? 2. मैं उद्यान की शोभा को देख कर प्रसन्न होता हूँ । 3. तू हररोज़ प्रसन्न नहीं होता । 4. हे बालिका निर्धनों पर कोप न करो । 5. तारे रात को चमकते हैं, प्रातःकाल नष्ट हो जाते हैं ।



पञ्चदश: पाठ:

दिवादिगण

निशायाम् आकाशे तारकाणि दीव्यन्ति । ईश्वरस्य कृपया दुःखानि नश्यन्ति चित्तम् च शाम्यति । वर्षासु वने मयूरा: नृत्यन्ति । ग्रीष्मे सरोवराणाम् जलम् शुष्यति । जनक: पुत्रेभ्य: कुप्यति । बालिका: चौरेभ्य: त्रस्यन्ति, सज्जना: दुर्जनेभ्य: त्रस्यन्ति । हे कन्ये वस्त्राणि सीव्यत: । जलै: गात्राणि शुध्यन्ति, मन: सत्येन शुध्यति । नृपा: दुष्टान् न क्षाम्यन्ति ।

(N. Para.) मूर्खम् कार्यकाले न मुह्यति । प्रातःकाले, उद्याने भ्रमाम: वनस्य शोभाम् च पश्याम: । रथानाम् शब्दै: काका: त्रस्यन्ति । वयम् न कदापि लुभ्याम: । हे पुत्र! त्वम् न कदापि लुभ्य, लोभ: दुःखस्य कारणम् भवति । किम् अहम् पापानि क्षाम्यामि ? हे राम! प्रजानाम् दुःखानि नश्यन्तु, प्रजा: च तुष्यन्तु । किम् युवाम् सरिताया: तटे भ्रमथ: ?

अभ्यास

१. नये शब्द :- दिव् (दीव्) - चमकना; नश् - नष्ट होना; शम् (शाम्) शान्त होना; शुष् सूखना; त्रस् - डरना; सिव् (सीव्) - सीना; क्षम् (क्षाम्) - क्षमा करना; तुष् - प्रसन्न होना; लुभ् - लोभ करना

२. लकार के लिये :-

दीव्यति	दीव्यत:	दीव्यन्ति
दीव्यसि	दीव्यथ:	दीव्यथ
दीव्यामि	दीव्याव:	दीव्याम:

३. घर का काम :-

(क). रिक्त स्थानों की पूर्ति करो :-

१. निशायाम् तारकाणि ----- । २. सज्जना: दुर्जनेभ्य: ----- । ३. पिता ----- कुप्यति । ४. मन: ----- शुध्यति । ५. नृपा: ----- न क्षाम्यन्ति ।

(ख) अनुवाद कीजिये :-

१. तुम सदा कहां घूमते हो ? २. मैं उद्यान की शोभा को देख कर प्रसन्न होता हूं । ३. तू हर रोज़ कपड़ा नहीं सीता । ४. हे बालिकाओ निर्धनों पर कोप न करो । ५. तारे रात को चमकते हैं, प्रातःकाल नष्ट हो जाते हैं ।

। जन्माष्टमी का संदेश ।

~~(लेखक : [illegible])~~

जन्म ले लेने मात्र से कोई मनुष्य महापुरुष नहीं बन सकता, और किसी भी मनुष्य के साधारण कृत्यों के आधार पर उस का जन्मोत्सव नहीं मनाया जाता। किसी भी पुरुष के अलौकिक तथा असाधारण कार्य कलापों से प्रभावित हो कर ही जनता उस को महापुरुष की उपाधि देती है तथा उस के इन महान् कार्यों की स्मृति को स्थायी बनाये रखने के लिए, जन्मोत्सवादि भिन्न भिन्न पर्वों को मनाया करती है। भगवान् कृष्ण ने गीता का महान् तथा गम्भीर उपदेश दे कर हिन्दू जाति को गौरवान्वित किया है। उन्हों ने हमारी संस्कृति तथा सभ्यता को समुन्नत किया है। यह उन की महान् देन है जिस के ऋण से हिन्दू जाति कभी मुक्त नहीं हो सकती। यही कारण है कि समस्त महापुरुषों में उन को सर्वोच्च स्थान प्राप्त हुआ है और उन की स्मृति में हम जन्माष्टमी नाम का पर्व मनाते हैं।

हमारे सन्मुख भगवान् कृष्ण के दो रूप हैं। एक रूप तो वह है जो कि हिन्दी की भक्तिकालीन तथा रीतिकालीन कवियों ने हमारे सामने रखा है। इन कवियों ने केवल माधुर्य पूर्ण तथा सौन्दर्य पूर्ण रूप को ही अपनी कविताओं तथा कृतियों में स्थान दिया है। कृष्ण का घुटनों के बल चलना, मक्खन आदि के लिये हठ करना, मुख पर दही का लेपन कर लेना, शरीर को धूलि धूसरित कर लेना आदि उन की बाल्य काल की क्रीड़ायें सूरदास आदि कवियों को बहुत भाई हैं। पुनः जब वह कुछ बड़े हुए तो गौएं चराना, बंसी बजाना, गोप बालकों के साथ खेलना, मक्खन चुराना, यमुना में स्नान करती हुई गोपियों के कपड़े उठा कर कदम्ब के वृक्षों पर चढ़ कर पत्तों में छुप जाना इत्यादि क्रीड़ाओं का वर्णन इन कवियों ने बड़े सुन्दर ढंग से किया है। युवावस्था में गोपियों के साथ प्रेम, राधा के साथ क्रीड़ा, गोपियों तथा ब्रजबालाओं और यशोदा आदि का विरह वर्णन मिलता है। गोपियों आदि के प्रेम के वर्णन में कवि तो मर्यादा का उल्लंघन तक कर गये हैं। शृङ्गार रस के कवियों ने राधा तथा कृष्ण के प्रेम की आड़ ले कर अपनी शृङ्गारिक कविताओं की रचना की है। कोई इस रूप का साक्षात्कार तो हम आजकल [illegible] कृष्ण के [illegible] रूप को

षोडश: पाठ:

लङ् लकार

राम: वनम् अगच्छत्

राम: लक्ष्मण: च वनम् अगच्छताम् ।

सीता राम: लक्ष्मण: च वनम् अगच्छन् ।

रावण: लङ्कायाम् अवसत् मारीच: अपि तत्र अवसत् । तौ वनम् अधावताम् । सीता कुटीरे आसीत् । राम: लक्ष्मण: च कुटीरे न आस्ताम् । रावण: सीताम् अहरत् । राम: अपि अमुह्यत् लक्ष्मण: अपि अमुह्यत् । वनस्य जीवा: खगा: च व्याकुला: अभवन् । सुग्रीवस्य अमात्य: सीताया: अन्वेषणाय समुद्रम् अतरत् । स: अशोकवाटिकायाम् सीताम् अपश्यत् । सीता तम् यदा अपश्यत् तदा सा अत्रस्यत् । स: सीतायै रामस्य ~~अङ्गुलीयकम्~~ अङ्गुलीयकम् अयच्छत् । सीताया: भयम् अनश्यत् । पवनसुत: फलानि अखादत् उद्यानम् च अनाशयत् । रावण: पवनसुताय अकुप्यत् ।

किम् त्वम् रामस्य कथाम् अपठ: ? अहम् तु रामस्य कथाम् अपठम् । वयम् तु रामलीलाम् अपि अपश्याम । युवाम् रामस्य चित्रम् अलिखताम् । आवाम् ~~स~~ अयोध्याम् अपश्याव ।

अभ्यास

१. नये शब्द:- कुटीर - कुटिया (दा) यच्छ - देना
अङ्गुलीयक - अंगूठी (तृ) तर - तैरना
पवनसुत: - हनुमान्

२. समझने के लिये:- अगच्छत् अगच्छताम् अगच्छन्
अगच्छ: अगच्छतम् अगच्छत
अगच्छम् अगच्छाव अगच्छाम

३. घर का काम:- (क) रिक्त स्थानों की पूर्ति करो:-
१. सीता लक्ष्मण: च रामेण ---- वनम् ---- । २. लङ्कायाम् राक्षसा: ---- । ३. रावण: सीताम् ---- । ४ किम् ---- पाठम् अपठ: । वृक्षात् ---- अपतन् ।

(ख) हम दोनों ने पाठ ~~पढ़ा~~ याद किया । गोपाल ने खाना खाया और पानी पिया । कन्यायें खेल के मैदान में खेलीं । हम ने रात्रि को आकाश में तारों को देखा । क्या तुम ने रामायण को पढ़ा ? राम एक धर्मशील राजा था ।

देन यह है कि यह मानव जाति को निष्क्रियता की दलदल से निकाल कर कर्म मार्ग का उपदेश देती है। मनुष्य को परिणाम की चिन्ता न करते हुये निरन्तर कर्तव्य पालन करते जाना चाहिये। गीता अध्याय 2 में स्पष्ट लिखा है :

कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन मा कर्मफलहेतुर्भूर्मा ते संगोऽस्त्वकर्मणि

किसी भी निरुत्साहित जाति में प्राण फूंकने के लिये यह उपदेश एक जादू की शक्ति रखता है। परन्तु बड़े खेद की बात है, कि भगवान कृष्ण का इतना महान संदेश हमारे पास होते हुये भी हम अवनति के गढ्ढे में पड़े हुये हैं। हम भाग्यवादी बन गये, हाथ पर हाथ धरे राम भरोसे बैठे रहने के आदी बन गये हैं। हम ने भगवान कृष्ण के महान उपदेश को भुला दिया है। हम ने उन के जीवन से शिक्षा ग्रहण न की। हम उन के वास्तविक तथा कल्याणकारी रूप को समझ न सके। कृष्ण के नाम को दिन रात ज़बान पर रखते हुये तथा गीता को माता का स्थान देते हुये भी हम ने उन का आदर नहीं किया। कोरी उपासना तथा कोरे नाम स्मरण से कुछ भी नहीं बन सकता। हमारा कल्याण तो तभी हो सकता है, जब कि हम गीता के उपदेशों का अध्ययन करें तथा अपने कर्तव्य का निष्काम भावना से पालन करते हुये अपना अपना देश तथा जाति का कल्याण करें।

जन्माष्टमी प्रतिवर्ष हमारे लिये यही संदेश ले कर आती है कि हम भगवान कृष्ण के बताये हुये उस मार्ग पर चलें जिस का उपदेश कि उन्हों ने मोहग्रस्त तथा निष्क्रिय: अर्जुन को अपने कर्तव्य के प्रति जागरूक होने के लिये कुरुक्षेत्र के समराङ्गण में दिया था। एक दिन उपवास कर लेने, कीर्तन में सम्मिलित होने तथा मन्दिर में जा कर भगवान कृष्ण की मूर्ति के दर्शन मात्र कर लेने से कल्याण की सम्भावना नहीं। कल्याण तो तभी होगा जब कि हम उन के बताये हुये मार्ग पर चल कर अपने देश तथा जाति की उन्नति करेंगे। कृष्ण जन्माष्टमी मनाने का यही रहस्य [illegible] है। इस समय देश के सामने बड़ी बड़ी जटिल समस्यायें हैं। हम ने उन का समाधान करना है। अपने देश को उन्नत देशों के स्तर पर ला कर खड़ा करना है। भूख तथा बेकारी को दूर करना है। नवार्जित स्वतन्त्रता की रक्षा के लिये अपने को दृढ़ तथा शक्तिशाली बनाना है। यह सब कुछ तभी हो सकता है जब कि हम सब अपने अपने कर्तव्य का पालन गीता के उपदेशानुसार निष्काम भाव से करें। तभी हम वास्तविक अर्थ में कृष्ण के भक्त कहला सकते हैं तथा गीता जैसे महान ग्रन्थ पर गर्व कर सकते हैं।

सप्तदशः पाठः → आश्रमः

(इकारान्त पुंलिङ्ग, तुदादिगण)

ह्यः अहम् आश्रमम् अगच्छम्। आश्रमे ऋषयः मुनयः यतयः च वसन्ति। ~~तत्र द्वौ गिरी अपि स्तः। गिरी~~। तत्र एकः गिरिः अस्ति। गिरौ द्वौ कपी वसतः। तौ मुनीन् न तुदतः। वृक्षेषु पुष्पाणि सन्ति। पुष्पेषु अलयः गुञ्जन्ति। यदा ऋषयः ~~फलानि~~ इच्छन्ति तदा कपिः फलानि क्षिपति। मुनयः पाणिभ्याम् स्वयं जलम् यच्छन्ति। शिष्याः जलेन पादपान् सिञ्चन्ति आश्रमम् च गोमयेन लिम्पन्ति। अत्र नृपतयः यतिभ्यः अङ्कुशम् यच्छन्ति। ऋषीणाम् (यदा ते [illegible] पृच्छन्ति तदा) चित्तम् शान्तम् भवति। ते शिष्यान् उपदिशन्ति — भो शिष्याः! हरिः संसारम् सृजति। यूयम् हरिम् भजत। अग्नौ आहुतिम् क्षिपत। ~~तस्य भक्तानाम् व्याधयः नश्यन्ति~~। जीवान् न तुदत। अरीन् क्षमयत, हरेः भक्तानाम् व्याधयः नश्यन्ति।

अत्र आश्रमे कदापि कलिः न भवति। ऋषयः ज्ञानस्य निधयः सन्ति। मुनीनाम् आचारः शुचिः अस्ति। भूपतीनाम् अपि तथा आदरः न भवति यथा मुनीनाम्, ऋषीणाम् च। ते रवेः मरीचयः इव दीप्यन्ते, संसारस्य आधिम् च हरन्ति। ते (संसारम् [illegible]) मोक्षम् विन्दन्ति।

अभ्यासः

1. नये शब्द:—

ह्यः	कल (गुजरी हुई)	तुद्	तंग करना
यति	संन्यासी	(इष्) इच्छ्	चाहना
गिरि	पर्वत	(लिप्) लिम्प	लीपना
कपि	बन्दर	(सिच्) सिञ्च	सींचना
रवि	सूर्य	सृज्	उत्पन्न करना
अरि	शत्रु	क्षिप्	फेंकना
कलिः	कलह	(प्रच्छ्) पृच्छ	पूछना
मरीचि	किरण	(विद्) विन्द	पाना
अलि	भौंरा		

तुदति तुदतः तुदन्ति
तुदसि तुदथः तुदथ
तुदामि तुदावः तुदामः

2. स्मरण के लिये:— (क) (ख) हरि शब्द के रूप व्याकरण वीथिका से लिखिये
3. घर का काम:—
(क) शब्दों का प्रयोग वाक्यों में कीजिये:—
पाणिभ्याम्, अलयः, गिरिषु, मुनीनाम्, हरये।
(ख) अनुवाद कीजिये:—
1. भौंरे फूलों पर मंडराते हैं और रस को पीते हैं। 2. बन्दर पर्वतों पर फलों को खाते हैं और फेंकते हैं। 3. क्या समुद्र (उदधि) में मणियां होती हैं। 4. राजा लोग तलवार (असि) से शत्रुओं को जीतते हैं। 5. क्या ऋषि ने आश्रम के वृक्षों को जल से सींचा?

सकते हैं। भारत की अधिकतर जन संख्या, विशेषकर भक्त लोग कृष्ण के इसी रूप में ही श्रद्धा तथा आस्था रखते हैं और इसी को कल्याणकर समझते हैं।

भगवान कृष्ण का दूसरा रूप वह है जो महाभारत के रचयिता भगवान वेद व्यास ने हमारे सामने रखा है। यहां कृष्ण एक सच्चे योद्धा, राजनीतिज्ञ तथा धार्मिक नेता के रूप में हमारे सामने आते हैं। वह सत्य तथा धर्म का पक्ष ले कर शिशुपाल, जरासंध तथा कंस आदि दुराचारी तथा पापी शासकों का संहार करते हैं। और जब धर्म क्षेत्र कुरुक्षेत्र की युद्ध भूमि में, अर्जुन मोह ग्रस्त हो कर युद्ध करने से इनकार कर देते हैं, तथा हथियार छोड़ कर रथ से नीचे उतर जाते हैं तो भगवान कृष्ण उन्हें कर्म योग का सच्चा तथा कल्याणकारी उपदेश दे कर उन के मोह को दूर करते हैं और उन को युद्ध के लिये तैयार करते हैं। यहां कृष्ण एक सच्चे योगीराज के रूप में प्रकट होते हैं।

भगवान कृष्ण के इन दोनों रूपों में आकाश पाताल का अन्तर है। कहां योगीराज कृष्ण और कहां गाय व बछड़ों के चारा चराने वाला ग्वाला। इस महान अन्तर का उत्तरदायित्व हिन्दी के कवियों तथा अन्ध विश्वासी भक्तों पर है, जो भगवान कृष्ण को योगीराज के पद से छीन कर एक चोर तथा कामुक ग्वाले के स्थान पर ले आये हैं। भगवान कृष्ण को वे जिस रूप में देखते हैं, वह वस्तुतः निकृष्ट रूप है। जन साधारण तथा समाज की दृष्टि से यह रूप कल्याणप्रद नहीं। एक साधारण व्यक्ति यह समझने में भी असमर्थ है, कि कृष्ण तथा गोपियों का क्या सम्बन्ध था। शायद भक्त तथा कवि लोग ही इस बात को समझते होंगे।

भगवान कृष्ण का दूसरा रूप ही सर्वोत्कृष्ट तथा मंगलकारी है। गीता का अमर संदेश भगवान कृष्ण के इसी रूप की उपज है। गीता अनमोल मोतियों का एक कोष है। इस महान ग्रन्थ का सम्मान केवल भारत वासियों ने ही नहीं अपितु विश्व के सभी देशों तथा जातियों ने किया है। यही कारण है, कि गीता का अनुवाद संसार भर की सभी सभ्य तथा उन्नत भाषाओं में हो चुका है। किसी भी पतित जाति को अवनति के गर्त से उठा कर उन्नति के शिखर पर बिठा देने के लिये श्री गीता के उपदेश में प्रचुर मात्रा में सन्निहित है। गीता की सबसे उत्तम

एकादशः पाठः

(प्रत्यय ज्ञान, क्त्वा क्त)

चौराः धनम् चोरयन्ति। नृपतयः चौरान् ताडयन्ति दण्डयन्ति च। अतः अहम् कथयामि यत् चौराणाम् राजपुरुषेभ्यः भयम् भवति। हे बालकाः! यूयम् किम् गायथ? हे अतिथयः! यूयम् भोजनम् भक्षयत। हे मुनयः! यूयम् धर्मम् चिन्तयत। हे हरे! त्वम् हयः किम् अभक्षयः। हे कवे! किम् त्वम् काव्यम् अरचयः। कविः कालिदासः ~~रघुवंशम्~~ शकुन्तलाम् अरचयत् भवभूतिः च उत्तरम् रामचरितम्। अहम् वृद्धान् अपूजयम्। युवाम् धर्मम् अपालयतम्। नरपतयः प्रजाः पालयन्ति। त्वम् किम् तोलयसि?

सीता पाठम् पठित्वा पत्रम् अलिखत्। गोपालः भोजनम् भक्षयित्वा जलम् अपिबत्। आवाम् गिरिम् गत्वा कविभ्यः भोजनम् अयच्छाव। देवदत्तः गृहम् गत्वा पाठम् स्मरति। सूदः कथाम् कथयित्वा तण्डुलान् पचति। मयूराः नर्तित्वा केकारवम् कुर्वन्ति। युवाम् स्नात्वा हरिम् अपूजयतम्। वयम् कथाम् श्रुत्वा तुष्यामः। रामः रावणम् जित्वा हत्वा च अयोध्याम् सीतया सह आगच्छत्।

लक्ष्मणेन ग्रन्थः पठितः। ~~बालकेन भोजनम् खादितम्।~~ शकुन्तलया ~~[illegible]~~ पाठः पठितः। सीतया पुस्तकम् पठितम्। मुनयः आश्रमम् गताः। गोपालेन किम् श्रुतम्। मया गीतम् श्रुतम्। रावणेन सीता हृता। रावणः रामेण हतः। बालकैः भोजनम् खादितम् जलम् च पीतम्। राक्षसाः रणे मृताः। हरेः कृपया सज्जनाः तुष्टाः दुर्जनाः च नष्टाः। श्रान्ताः भृत्याः स्नात्वा फलानि अभक्षयन्।

अभ्यास

१. नये शब्द:— राजपुरुष - सिपाही
केकारव - मोर की ध्वनि
(चुर्) चोर् - चुराना
कथ् — कहना
भक्ष् — खाना
चिन्त् - चिन्तन करना
पूज् - पूजा करना
(तुल्) तोल् - तोलना

२. समझने के लिये:— चोरयति, चोरयतः, चोरयन्ति
चोरयसि चोरयथः चोरयथ
चोरयामि चोरयावः चोरयामः

	क्त्वा - त्वा	क्त - त
ज्ञा	ज्ञात्वा	ज्ञातः
पठ्	पठित्वा	पठितः
चल्	चलित्वा	चलितः
नृत्	नर्तित्वा	नर्तितः
चुर्	चोरयित्वा	चोरितः

ग) घर का काम :—

(क) शब्दों का वाक्यों में प्रयोग कीजिये :—

पठित्वा, ज्ञातम्, रक्षितम्, स्नात्वा, कथयति, चोरयति

(ख) अनुवाद कीजिये :—

१. अध्यापक बालकों को गिनता है। २. कृषक हल चलाते हैं और भोजन खा कर ठंडा पानी पीते हैं।

३. घोड़े घास को खा कर प्रसन्न होते हैं।

४. सिपाहियों ने चोरों को पीटा और उन्हें दण्ड दिया।

५. गरीब लोग ग्राम को चले गये हैं।

६. थके हुये मजदूर वृक्षों की छाया में विश्राम करते हैं।

एकोनविंशः ~~नवमः~~ पाठः

संख्या

1- एकः देवः सर्वभूतेषु गूढः।

2- द्वौ पक्षौ मासस्य भवतः। कृष्णपक्षः च शुक्लपक्षः च।

3- त्रयः लोकाः भवन्ति। पृथिवी लोकः पाताललोकः स्वर्गलोकः

4- चत्वारः वेदाः सन्ति। ऋग्वेदः, यजुर्वेदः, सामवेदः अथर्ववेदः च।

5- पञ्च यज्ञाः गृहस्थस्य भवन्ति। ब्रह्मयज्ञः, देवयज्ञः, पितृयज्ञः, भूतयज्ञः, अतिथियज्ञः च।

6- षड् ऋतवः भारते वर्षे भवन्ति। ग्रीष्मः, वर्षा, शरत्, हेमन्तः, शिशिरः, वसन्तः च।

7- सप्त काण्डानि रामायणस्य सन्ति, बालकाण्डम् अयोध्याकाण्डम्, अरण्यकाण्डम् किष्किन्धाकाण्डम् सुन्दरकाण्डम् युद्धकाण्डम्, उत्तरकाण्डं च।

8- अष्ट अष्टाध्यायीनामव्याकरणग्रन्थस्य अध्यायाः सन्ति

9- नव रत्नानि सन्ति।

10- दश अवताराः विष्णोः भवन्ति :—

मत्स्यः कूर्मो वराहश्च नरसिंहोऽथ वामनः।
रामो रामश्च कृष्णश्च बुद्धः कल्की च ते दश॥

11- एकादश प्रसिद्धाः उपनिषदः सन्ति। ईश-केन-कठ-प्रश्न-मुण्डक-माण्डूक्य-तैत्तिरीय-ऐतरेय-छान्दोग्य-बृहदारण्यक-श्वेताश्वतराः इति।

12- द्वादश संवत्सरस्य मासाः भवन्ति — चैत्रः, वैशाखः, ज्येष्ठः, आषाढः, श्रावणः, भाद्रपदः, आश्विनः, कार्तिकः, मार्गशीर्षः, पौषः, माघः, फाल्गुनः च।

13 त्रयोदश — त्रयश्च दश च त्रयोदश भवन्ति।

14 चतुर्दश विद्याः भवन्ति। षड् वेदाङ्गानि, चत्वारः वेदाः, मीमांसा-दर्शनम्, न्यायदर्शनम्, पुराणम्, धर्मशास्त्रम् च।

15 पञ्चदश

16 षोडश

17 सप्तदश

18 अष्टादश

19 नवदश, ऊनविंशतिः, एकोनविंशति

20 विंशतिः

	क्त्वा - त्वा	क्त - त
गम्	गत्वा	गतः
पठ्	पठित्वा	पठितः
चल्	चलित्वा	चलितः
नृत्	नर्तित्वा	नर्तितः
चुर्	चोरयित्वा	चोरितः

ग) घर का काम:—

(क) शब्दों का वाक्यों में प्रयोग कीजिये:—

पठित्वा, आगतम्, रक्षितम्, स्नात्वा, कथयति, चोरयति

(ख) अनुवाद कीजिये:—

1. अध्यापक बालकों को गिनता है। 2. कृषक हल चलाते हैं और भोजन खा कर ठंडा पानी पीते हैं।
3. घोड़े घास को खा कर प्रसन्न होते हैं।
4. सिपाहियों ने चोरों को पीटा और उन्हें दण्ड दिया।
5. गरीब लोग, अपने स्वग्राम को चले गये हैं।
6. थके हुये मजदूर वृक्षों की छाया में विश्राम करते हैं।

एकोनविंशः ~~नवमः~~ पाठः

संख्या

1 - एकः देवः सर्वभूतेषु गूढः।

2 - द्वौ पक्षौ मासस्य भवतः। कृष्ण पक्षः च शुक्लपक्षः च।

3 - त्रयः लोकाः भवन्ति। पृथिवी लोकः पाताललोकः स्वर्गलोकः

4 - चत्वारः वेदाः सन्ति। ऋग्वेदः, यजुर्वेदः, सामवेदः अथर्ववेदः च।

5 - पञ्च यज्ञाः गृहस्थस्य भवन्ति। ब्रह्मयज्ञः, देवयज्ञः, पितृयज्ञः;
भूतयज्ञः, अतिथियज्ञः च।

6 - षड् ऋतवः भारते वर्षे भवन्ति। ग्रीष्मः, वर्षाः, शरत्, हेमन्तः,
शिशिरः, वसन्तः च।

7 - सप्त काण्डानि रामायणस्य सन्ति, बालकाण्डम् अयोध्याकाण्डम्
अरण्यकाण्डम् किष्किन्धाकाण्डम् सुन्दरकाण्डम् युद्ध-
काण्डम् उत्तरकाण्डं च।

8 - अष्ट अष्टाध्यायीनामव्याकरणग्रन्थस्य अध्यायाः सन्ति

9 - नव रत्नानि सन्ति।

10 - दश अवताराः विष्णोः भवन्ति :-

मत्स्यः कूर्मो वराहश्च नरसिंहोऽथ वामनः।
रामो रामश्च कृष्णश्च बुद्धः कल्की च ते दश॥

11 - एकादश प्रसिद्धाः उपनिषदः सन्ति। ईश-केन-कठ-प्रश्न-
मुण्डक-माण्डूक्य-तैत्तिरीय-ऐतरेय-छान्दोग्य-बृहदारण्यक-
श्वेताश्वतराः इति।

12 - द्वादश संवत्सरस्य मासाः भवन्ति - चैत्रः, वैशाखः, ज्येष्ठः,
आषाढः, श्रावणः, भाद्रपदः, आश्विनः, कार्तिकः, मार्गशीर्षः,
पौषः, माघः, फाल्गुनः च।

13 त्रयोदश - ~~त्रि~~ त्रयश्च दश च त्रयोदश भवन्ति।

14 चतुर्दश विद्याः भवन्ति। षट् वेदाङ्गानि, चत्वारः वेदाः, मीमांसा-
दर्शनम्, न्यायदर्शनम्, पुराणम्, धर्मशास्त्रम् च।

15 पञ्चदश

16 षोडश

17 सप्तदश

18 अष्टादश

19 नवदश, ऊनविंशतिः, एकोनविंशति

20 विंशतिः

सप्तपाठ

अभ्यास :- क, गीतं कण्ठस्थ याद कीजिये

ख, प्रश्नों के उत्तर लिखिये :-

१. कति लोकाः भवन्ति?

२. भारतवर्षे कति ऋतवः भवन्ति?

३. शास्त्राणि उपनिषदः कति सन्ति?

४. मातापिता नमामि इति लिखत।

विंशः पाठः

(लृट् लकार, उकारान्त पुंल्लिङ्ग)

साधवः परोपकाराय सदा धनम् दास्यन्ति । गुरवः धर्मम् वादयिष्यन्ति । शिष्याः तरूणाम् छायायाम् पाठम् पठिष्यन्ति । शिशू क्रीडाक्षेत्रे, ~~क्रीडतः~~ । क्रीडिष्यतः । शम्भोः कृपया प्रजाः सुखेन वत्स्यन्ति । अहम् पलाण्डुम् न खादिष्यामि । गोमायवः कर्कटीन् खादिष्यन्ति । वायवः वेगेन वृक्षाणाम् पत्राणि फलानि च पातयिष्यन्ति । प्रभो ! वयम् शत्रून् कदा जेष्यामः ? साधूनाम् रक्षार्थं पापानाम् च विनाशाय कृष्णः ~~स~~सम्भविष्यति ।

अद्य आकाशे मेघाः भ्रमिष्यन्ति । मन्दम् वास्यति वायुः । निरन्तरम् जलस्य बिन्दवः पतिष्यन्ति । भारते वर्षे षड् ऋतवः भवन्ति । आवाम् ~~ऋतवो~~ ~~षड्ऋतूनाम्~~ ऋतून् वर्णयिष्यावः । ग्रीष्मे भानोः किरणाः सरोवराणाम् जलम् शोषयिष्यन्ति । वर्षासु आकाशे मेघाः भ्रमिष्यन्ति, मयूराः नर्तिष्यन्ति, जलबिन्दवः च पतिष्यन्ति । शरत्काले कमलानि तडागेषु विकसिष्यन्ति । हेमन्ते शालयः भविष्यन्ति । शिशिरे भानोः आतपः शीतकरः भविष्यति । वसन्ते द्रुमाः सपुष्पाः वायुः सुगन्धिः दिवसाः च रम्याः भविष्यन्ति । अहम् श्वः पाठशालां गमिष्यामि । वयम् तत्र एव स्थास्यामः । गुरुः उपदेशम् दास्यति । वयम् धर्मम् ज्ञास्यामः । यूयम् जलम् पास्यथ ।

प्रश्नावलि

1 - नये शब्द :-

तरु	~~पेड़~~ वृक्ष	वा	चलना (हवा का)
शिशु	बच्चा	ज्ञा	जानना
पलाण्ड	प्याज	पा	पीना
गोमायु	गीदड़	स्था	ठहरना
कर्कटि	ककड़ी		

2. अभ्यास के लिये :- विभिन्न धातुओं से लृट् लकार के रूपों के लिये व्याकरण पाठ शिक्षक देखिये।

3. घर का काम :- (क). प्रश्नों के उत्तर दो :-

1. साधवः परोपकाराय किम् करिष्यन्ति ?

किमर्थम्

2. कृष्णः किं सम्भावयति ?
3. भारतवर्षे कति ऋतवः सन्ति ?
4. मयूराः कदा नृत्यन्ति ?
5. किम् यूयम् जलम् पास्यथ ?

(ख) संस्कृत में अनुवाद करो :-

1. मैं आज ही घर जा कर पुस्तक को पढ़ूँगा ।
2. ईश्वर की कृपा से प्रजायें सुख से रहेंगी ।
3. तुम दोनों घर कब जाओगे ?
4. क्या बालक वृक्षों की छाया में बैठेंगे ?
5. आज आकाश में बादल घूमेंगे ।
6. देश के सैनिक शत्रुओं को जीतेंगे ।
7. मैं वेदों को पढ़ कर पण्डित बनूँगा ।

एकविंश पाठः

पद्यानि

वेदे रामायणे चैव पुराणे भारते तथा।
आदौ मध्ये तथा चान्ते हरिः सर्वत्र गीयते ॥१॥

सर्ववेदमयी गीता सर्वधर्ममयो मनुः।
सर्वतीर्थमयी गङ्गा सर्वदेवमयो हरिः ॥२॥

सर्वं परवशं दुःखं सर्वमात्मवशं सुखम्।
एतद् विद्यात् समासेन लक्षणं सुखदुःखयोः ॥३॥

ताराणां भूषणं चन्द्रो नारीणाम् भूषणं पतिः।
पृथिव्या भूषणं राजा विद्या सर्वस्य भूषणम् ॥४॥

विद्या मित्रं प्रवासेषु माता मित्रं गृहेषु च।
व्याधितस्यौषधं मित्रं धर्मो मित्रं मृतस्य च ॥५॥

सर्पः क्रूरः खलः क्रूरः सर्पात् क्रूरतरः खलः।
मन्त्रौषधिवशः सर्पः खलः केन निवार्यते ॥६॥

कोकिलानां स्वरो रूपम् नारीरूपं पतिव्रतम्।
विद्या रूपं कुरूपाणां क्षमा रूपं तपस्विनाम् ॥७॥

~~स जीवति गुणा यस्य धर्मो यस्य च जीवति।~~
~~गुणधर्मविहीनस्य जीवनं निष्प्रयोजनम् ॥८॥~~

सुखस्यानन्तरं दुःखं दुःखस्यानन्तरं सुखम्।
सुखदुःखम् मनुष्याणां चक्रवत् परिवर्तते ॥८॥

अभ्यास

1. नयशब्दः :- समासेन - संक्षेप से
   प्रवासेषु - विदेश में
   क्रूर - कठोर
   अनन्तरम् - पश्चात्

2. सन्धयः :- चान्ते = च + अन्ते
   व्याधितस्यौषधम् = व्याधितस्य + औषधम्
   सुखस्यानन्तरं = सुखस्य + अनन्तरम्
   दुःखस्यानन्तरम् = दुःखस्य + अनन्तरम्

3. घर का काम :- (क) — पांचवें तथा सातवें श्लोक को कण्ठस्थ करो।
   (ख) — तीसरे तथा चौथे श्लोक का अर्थ लिखो।

किमर्थम्

२. कृष्णः कंसं सम्मानयति ?

३. भारतवर्षे कति प्रदेशाः सन्ति ?

४. मयूराः कदा नृत्यन्ति ?

५. किमर्थं यूयम् जनम् पालयथ ?

(ख) संस्कृत में अनुवाद करो :-

१. मैं आज ही घर जा कर पुस्तक को पढ़ूँगा।

२. ईश्वर की कृपा से प्रजायें सुख से रहेंगी।

३. तुम दोनों घर कब जाओगे ?

४. क्या बालक वृक्षों की छाया में बैठेंगे ?

५. आज आकाश में बादल घूमेंगे।

६. देश के सैनिक शत्रुओं को जीतेंगे।

७. मैं कथा को पढ़ कर पण्डित बनूँगा।

एकविंश पाठः

पद्यानि

वेदे रामायणे चैव पुराणे भारते तथा।
आदौ मध्ये तथा चान्ते हरिः सर्वत्र गीयते ॥१॥

सर्ववेदमयी गीता सर्वधर्ममयो मनुः।
सर्वतीर्थमयी गङ्गा सर्वदेवमयो हरिः ॥२॥

सर्वं परवशं दुःखं सर्वमात्मवशं सुखम्।
एतद् विद्यात् समासेन लक्षणं सुखदुःखयोः ॥३॥

ताराणां भूषणं चन्द्रो नारीणाम् भूषणं पतिः।
पृथिव्या भूषणं राजा विद्या सर्वस्य भूषणम् ॥४॥

विद्या मित्रं प्रवासेषु माता मित्रं गृहेषु च।
व्याधितस्यौषधं मित्रं धर्मो मित्रं मृतस्य च ॥५॥

सर्पः क्रूरः खलः क्रूरः सर्पात् क्रूरतरः खलः।
मन्त्रौषधिवशः सर्पः खलः केन निवार्यते ॥६॥

कोकिलानां स्वरो रूपम् नारीरूपं पतिव्रतम्।
विद्या रूपं कुरूपाणां क्षमा रूपं तपस्विनाम् ॥७॥

~~स जीवति गुणा यस्य धर्मो यस्य स जीवति।~~
~~गुणधर्मविहीनस्य जीवनं निष्प्रयोजनम् ॥८॥~~

सुखस्यानन्तरं दुःखं दुःखस्यानन्तरं सुखम्।
सुखदुःखम् मनुष्याणां चक्रवत् परिवर्तते ॥८॥

अभ्यास

1. नयशब्दाः :- समासेन - संक्षेप से
   प्रवासेषु - विदेश में
   क्रूर - कठोर
   अनन्तरम् - पश्चात्

2. सन्धयः :- चान्ते = च + अन्ते
   व्याधितस्यौषधम् = व्याधितस्य + औषधम्
   सुखस्यानन्तर = सुखस्य + अनन्तरम्
   दुःखस्यानन्तरम् = दुःखस्य + अनन्तरम्

3. घर का काम :- (क) — पाँचवें तथा सातवें श्लोक को कण्ठस्थ करो।
   (ख) — तीसरे तथा चौथे श्लोक का अर्थ लिखो।

द्वाविंशः पाठः
(विधिलिङ्)

शिष्टाचारः

मनुष्यः ईश्वरम् भजेत। देवान् अर्चयेत। ब्राह्मणेभ्यः दक्षिणाम् दानम् च यच्छेत। गुरून् नमेत। आचार्यान् अर्चयेत। नित्यम् शुद्धवेषः प्रसन्नचित्तः च स्यात। सर्वदा निश्चिन्तः, निर्भयः, धार्मिकः, आस्तिकः नम्रः च स्यात। सत्यम् वदेत। अनृतम् न वदेत। परधनम् न अभिलषेत। अन्यदोषान् न कथयेत।

राष्ट्रे नागरिकाः धार्मिकाः भवेयुः। राज्यस्य आज्ञाः पालयेयुः। स्वकर्तव्यानि पालयेयुः। निर्बलानाम् दीनानाम् च धनानि न हरेयुः। उत्कोचम् न यच्छेयुः। राष्ट्रस्य रक्षायै स्वप्राणान् अपि उत्सृजेयुः। राज्याधिकारिणः नागरिकाणाम् हितम् इच्छेयुः। लोकानाम् अधिकारान् रक्षेयुः। तौ राजपुरुषौ चौरेभ्यः नगरम् रक्षताम्। स्त्रीपुरुषौ सुखेन वसताम्।

त्वम् देवेभ्यः अदत्वा गुरुभ्यः अतिथिभ्यः च अदत्वा भोजनम् न भक्षयेः। वस्त्रपूतम् जलम् पिबेः। गुरुम् अनत्वा पाठम् न पठेः। हे नागरिकाः! यूयम् ब्राह्मणान् न निन्देत। वृद्धान् गुरून् नृपान् च न अधिक्षिपेत। हे छात्राः! यूयम् अलसाः न स्यात। हे रामश्यामौ! युवाम् गुरुम् नत्वा गृहम् गच्छेतम्। हे विमलाकमले! युवाम् संध्याम् कृत्वा भजनम् गायेतम्।

गुरो! किम् अहम् पाठम् पठेयम्? किम् आवाम् याचकेभ्यः धनम् यच्छेव? किम् वयम् देशस्य रक्षायै युद्धे कुशलाः शत्रून् च जयेम?

अभ्यासः

१. नवशब्दाः :-
- अर्च् - पूजा करना
- अभि+लष् - इच्छा करना
- अधि+क्षिप् - तिरस्कार करना
- शुद्धवेषः - साफ वेश वाला
- उत्कोच - रिश्वत
- अदत्वा - बिना दिये हुये
- वस्त्रपूतम् - कपड़े से छाना हुआ
- याचक - भिखारी

२. [illegible] कीजिये :—

पठतु	पठताम्	पठन्तु
पठ:	पठतम्	पठत
पठानि	पठाव	पठाम

१. घर का काम :—

क. निम्न लिखित शब्दों के अर्थ लिख कर वाक्यों में प्रयोग ~~[illegible]~~ कीजिये :—

ईश्वरम्, धार्मिक:, अमृतम्, मधुरता, रक्षार्

ख. अनुवाद कीजिये :—

१. मनुष्य को सत्य बोलना चाहिये और धर्म का आचरण करना चाहिये।
२. तुम्हें संध्या करके भोजन खाना चाहिये।
३. देश के लोगों को धार्मिक होना चाहिये।
४. हे गुरुदेव! क्या तुम्हें एक गाँव को जाना चाहिये?
५. आज आकाश में बादल हैं शायद वर्षा हो।
६. हे बालको! निर्धनों का धन मत छीनो।

त्रयोविंशः पाठः

~~प्रकीर्णानि पद्यानि~~

सूक्तयः

१ - दुर्लभः प्राकृतं मित्रं दुर्लभः क्षेमकृत् सुतः।
दुर्लभा सदृशी भार्या दुर्लभः स्वजनः प्रियः॥

२. - साधूनां दर्शनं पुण्यं तीर्थभूता हि साधवः।
तीर्थं फलति कालेन सद्यः साधुसमागमः॥

३. - शान्तितुल्यं तपो नास्ति न संतोषात् परं सुखम्।
न तृष्णायाः परो व्याधिः न च धर्मो दयासमः॥

४. पादपानां भयं वातात् पद्मानां शिशिराद् भयम्।
पर्वतानाम् भयं वज्रात् साधूनाम् दुर्जनाद् भयम्॥

५. प्रथमे नार्जिता विद्या द्वितीये नार्जितं धनम्।
तृतीये नार्जितं पुण्यं चतुर्थे किं करिष्यति॥

६. हस्तस्य भूषणं दानं सत्यं कण्ठस्य भूषणम्।
कर्णस्य भूषणं शास्त्रं भूषणैः किं प्रयोजनम्॥

७. पयः पानं भुजङ्गानां केवलं विषवर्द्धनम्।
उपदेशो हि मूर्खाणां प्रकोपाय न शान्तये॥

८ - सत्येन धार्यते पृथ्वी सत्येन तपते रविः।
सत्येन वायवो वान्ति सर्वं सत्ये प्रतिष्ठितम्॥

९- पुस्तकेषु च या विद्या परहस्तेषु यद्धनम्।
उत्पन्नेषु च कार्येषु न सा विद्या न तद्धनम्॥

१०. सत्यं माता पिता ज्ञानं धर्मो भ्राता दया सखा।
शान्तिः पत्नी क्षमा पुत्रः षडेते मम बान्धवाः॥

१, अभ्यास

१. नवशब्दः - प्राकृतम् - सच्चा
क्षेमकृत् - प्राणों की रक्षा करने वाला
सद्यः - शीघ्र
व्याधिः - बीमारी

— लिङ् लकार [illegible]

2. स्मरण कीजिये :—

पठेत्	पठेताम्	पठेयुः
पठेः	पठेतम्	पठेत
पठेयम्	पठेव	पठेम

3. घर का काम :—

(क). निम्न लिखित शब्दों के अर्थ लिख कर वाक्यों में प्रयोग ~~करो~~ कीजिये :—

ईश्वरम्, धार्मिकः, अनृतम्, बहुला, खादेयुः।

(ख). अनुवाद कीजिये :—

1. मनुष्य को सच बोलना चाहिये और धर्म का आचरण करना चाहिये।
2. तुम्हें संध्या करके भोजन खाना चाहिये।
3. देश के लोगों को धार्मिक होना चाहिये।
4. हे गुरुदेव! क्या तुम्हें उस गाँव को जाना चाहिये।
5. आज आकाश में बादल हैं शायद वर्षा हो।
6. हे बालको! किसानों का खेत मत छीना।

त्रयोविंशः पाठः

~~एकोविंशति पर्वाणि~~

सूक्तयः

१ – दुर्लभः प्राकृतं मित्रं दुर्लभः क्षेमकृत् सुतः।
दुर्लभा सदृशी भार्या दुर्लभः स्वजनः प्रियः॥

२. – साधूनां दर्शनं पुण्यं तीर्थभूता हि साधवः।
तीर्थं फलति कालेन सद्यः साधुसमागमः॥

३. – शान्तितुल्यं तपो नास्ति न संतोषात् परं सुखम्।
न तृष्णायाः परो व्याधिः न च धर्मो दयासमः॥

४. पादपानां भयं वातात् पद्मानां शिशिराद् भयम्।
पर्वतानाम् भयं वज्रात् साधूनाम् दुर्जनाद् भयम्॥

५. प्रथमे नार्जिता विद्या द्वितीये नार्जितं धनम्।
तृतीये नार्जितं पुण्यं चतुर्थे किं करिष्यति॥

६. हस्तस्य भूषणं दानं सत्यं कण्ठस्य भूषणम्।
कर्णस्य भूषणं शास्त्रं भूषणैः किं प्रयोजनम्॥

७. पयःपानं भुजङ्गानां केवलं विषवर्द्धनम्।
उपदेशो हि मूर्खाणां प्रकोपाय न शान्तये॥

८ – सत्येन धार्यते पृथ्वी सत्येन तपते रविः।
सत्येन वायवो वान्ति सर्वं सत्ये प्रतिष्ठितम्॥

९ – पुस्तकेषु या विद्या परहस्तेषु यद्धनम्।
उत्पन्नेषु च कार्येषु न सा विद्या न तद्धनम्॥

१०. सत्यं माता पिता ज्ञानं धर्मो भ्राता दया सखा।
शान्तिः पत्नी क्षमा पुत्रः षडेते मम बान्धवाः॥

टिप्पणि

१. शब्दार्थः – प्राकृतम् – सच्चा
क्षेमकृत् – प्राणों की रक्षा करने वाला
सद्यः – शीघ्र
व्याधि – बीमारी

पय: - दूध
पुंज: - झुंड
अगणित - असंख्य

2. सन्धियाँ :— नास्तिकता = न + आस्तिकता
सद्गमन = सत् + गमन
तद्गमन = तत् + गमन

3. घर का काम :—
(क) पहिला तथा चौथा पद्य कण्ठस्थ कीजिये।
(ख) सातवें तथा दसवें पद्यों का अर्थ लिखिये।

पुनरावृत्तिः १०.

(इकारान्त उकारान्त नपुं०)

गङ्गायाः वारि पवित्रम् भवति । गौतमः नक्तम् दधि न भक्षयति । लोकाः मधुनः वर्णम् इच्छन्ति । मधुना शरीरस्य रोगाः नश्यन्ति । महाराजः रणजीतसिंहः अक्ष्णा काणः आसीत्, परन्तु स्वबलेन सः शत्रून् जित्वा अखिले पञ्जाबप्रदेशे राज्यम् अकरोत् । समुद्रस्य वारीणि मधुराणि न भवन्ति । वैद्यस्य अस्थीनि त्रुट्यन्ति । भोजनम् भक्षयित्वा वारि न पिबत । नक्तम् दधि न खादत ।

रवीन्द्रः ~~[illegible]~~ दधनि शर्कराम् मिश्रयति । बालस्य शरीरम् मृदु भवति । अहम् प्रतिदिनम् बहूनि फलानि भक्षयामि । सुरेन्द्रस्य जानुनि स्फोटः अस्ति । रामस्य मुखम् लघु अस्ति । ललनाः वारिणे कूपम् गच्छन्ति । नराः अक्षिभ्याम् पश्यन्ति । पशवः खगाः च अपि अक्षिभ्याम् पश्यन्ति । लोकेषु इदम् प्रसिद्धम् यत् काकः एकेन अक्ष्णा पश्यति । शिवस्य त्रीणि अक्षीणि सन्ति । हरः तृतीयेन अक्ष्णा कामदेवम् ~~[illegible]~~ अदहत् । पर्वतस्य सानुषु वृक्षाः सन्ति । वृक्षेषु मधुमक्षिकाः वसन्ति । मधुमक्षिकाः ~~[illegible]~~ पुष्पाणाम् रसम् वारीणि च पिबन्ति, ~~[illegible]~~ मधूनि च वमन्ति ~~[illegible]~~ । यदा मधुमक्षिकाः ~~[illegible]~~ दशन्ति तदा दुष्टानाम् बालकानाम् अक्षिभ्याम् अश्रूणि पतन्ति ।

अभ्यास

1. नपुं शब्दः —

वारि - पानी	नक्तम् - रात को
दधि - दही	मृदु - कोमल
मधु - शहद	लघु - छोटा
अक्षि - आँख	ललना - स्त्री
अस्थि - हड्डी	कूप - कुआँ
जानु - घुटना	हर - शिव
अश्रु - आँसू	वम् - वमन करना
	दह् - जलाना

2. निम्नांकित के रूप:— वारि, दधि तथा मधु के रूप परिशिष्ट में देखिये ।

पयः - दूध

भुजङ्गः - सांप

अर्जितुं - कमाना

2. सन्धियां :— नार्जिता = न + अर्जिता

सद्गमन = सत् + गमन

तद्गमन = तत् + गमन

3. घर का काम :—

(क) पहला तथा नौवां पद्य कण्ठस्थ कीजिये।

(ख) सातवें तथा दसवें पद्यों का अर्थ लिखिये।

सप्तविंशः पाठः

(इकारान्त उकारान्त नपुं०)

गङ्गायाः वारि पवित्रम् भवति । गौतमः नक्तम् दधि न भक्षयति । लोकाः मधुने बलम् इच्छन्ति । मधुना शरीरस्य रोगाः नश्यन्ति । महाराजः रणजितसिंहः एकेन अक्ष्णा काणः आसीत्, परन्तु स्वबलेन सः शत्रून् जित्वा अखिले पञ्जाबप्रदेशे राज्यम् अकरोत् । समुद्रस्य वारीणि मधुराणि न भवन्ति । वेदनया अक्षीणि रुदन्ति । भोजनम् भक्षयित्वा वारि न पिबत । नक्तम् दधि न खादत ।

रवीन्द्रः ~~[illegible]~~ दध्नि शर्कराम् मिश्रयति । बालस्य शरीरम् मृदु भवति । अहम् प्रतिदिनम् बहूनि फलानि भक्षयामि । सुरेन्द्रस्य जानुनि स्फोटः अस्ति । रामस्य मुखम् लघु अस्ति । ललना वारिणे कूपम् गच्छति । नराः अक्षिभ्याम् पश्यन्ति । पशवः ~~[illegible]~~ खगाः ~~[illegible]~~ च अपि अक्षिभ्याम् पश्यन्ति । लोकेषु इदम् प्रसिद्धम् यत् काकः एकेन अक्ष्णा पश्यति । शिवस्य त्रीणि अक्षीणि सन्ति । हरः तृतीयेन अक्ष्णा कामदेवम् ~~[illegible]~~ अदहत् । पर्वतस्य सानुषु वृक्षाः सन्ति । वृक्षेषु मधुमक्षिकाः वसन्ति । मधुमक्षिकाः ~~[illegible]~~, पुष्पाणाम् रसम् वारीणि च पिबन्ति, ~~[illegible]~~ एव मधूनि च वमन्ति ~~[illegible]~~ । यदा मधुमक्षिकाः ~~[illegible]~~ दशन्ति तदा दुष्टानाम् बालकानाम् अक्षिभ्याम् अश्रूणि पतन्ति ।

अभ्यास

2. नये शब्दः —

वारि	पानी	नक्तम्	रात को
दधि	दही	मृदु	कोमल
मधु	शहद	लघु	छोटा
अक्षि	आँख	ललना	स्त्री
अस्थि	हड्डी	कूप	कुआं
जानु	घुटना	हर	शिव
अश्रु	आंसू	वम्	वमन करना
		दह्	जलाना

2. निम्नांकित कीजिये:— वारि, दधि तथा मधु के सब विभक्ति परिशिष्ट में देखिये ।

3. घर का काम:—

(क) रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिये:—

१. वयम् दीपं न ---।

2. स्वजीवितेऽपि: ——— काकः प्रणीत्।

3. लोकाः ---- वनम् अगच्छन्।

४ ... मधुमक्षिकाः वसन्ति।

5. सूर्योदये ---- स्वादः स्वादति।

(ख) संस्कृत में अनुवाद कीजिये:—

1. शहद से शरीर के रोग नष्ट होते हैं।

2. तुम हररोज़ बहुत फल खाते हो।

3. पशु और पक्षी भी आँखों से देखते हैं।

4. हे बालको! भोजन खा कर पानी पी लिया।

5. शिव जी ने तीसरी आँख से कामदेव को जला दिया।

पञ्चविंशः पाठः

(किम् शब्द)

कः रामायणम् अलिखत्?

वाल्मीकिः रामायणम् अलिखत्।

कौ रामायणम् अगायताम्?

कुशः लवः च रामायणम् अगायताम्।

के वनम् अगच्छन्?

सीता, रामः लक्ष्मणः च वनम् अगच्छन्?

रामः कम् अमारयत्?

रामः रावणम् अमारयत्।

वानराः कान् अनाशयन्?

वानराः राक्षसान् अनाशयन्।

* अत्र कानि पुस्तकानि सन्ति

अत्र पञ्च पुस्तकानि सन्ति, द्वे पुस्तके मम हस्ते स्तः, त्रीणि च रामस्य हस्ते।

त्वम् कानि पुस्तकानि पठसि?

अहम् रामायणम्, महाभारतम्, शकुन्तलाम् च पठामि।

बालिकाः कस्य फलानि पश्यन्ति?

बालिकाः आम्रस्य फलानि पश्यन्ति।

प्रथम छात्रः कस्मिन् ग्रामे वसति?

प्रथम छात्रः शाहपुरनाम ग्रामे वसति।

चौराः कासाम् धनानि हरन्ति?

चौराः बालिकानाम् धनानि हरन्ति।

केषु केषु समुद्रेषु रत्नानि सन्ति।

गम्भीरेषु समुद्रेषु एव रत्नानि सन्ति।

अभ्यास

1. नये शब्दः वाल्मीकि - ~~रामायण के रचयिता~~ एक कवि का नाम
   शकुन्तला - एक नाटक का नाम
2. व्याकरण के लिये - किम् शब्द के रूप पुल्लिङ्ग, स्त्रीलिङ्ग तथा नपुंसकलिङ्ग में व्याकरण परिशिष्ट में देखिये।
3. घर का काम:

(क) निम्नलिखित शब्दों के वाक्यों में प्रयोग कीजिये:-

कानि, कस्य, केषु, कैः, के, केभ्यः।

(ख) अनुवाद कीजिये:—

१. तुम कौन कौन से सबक पढ़ाते हो।
२. यह किस बालक की पुस्तक है।
३. तू इनाम को किस के लिये देता है?
४. सीता किस के साथ वन को गई?
५. किन दो बालकों ने पाठ को पढ़ा?
६. अब भारतवर्ष में किस का राज्य है?

षड्विंशः पाठः

(यत्, तत्, सर्व)

सर्वम् पुराणम् साधु न भवति। अत्र लोके सर्वे लोकाः नूतनम् इच्छन्ति। ये जनाः सर्वाणि कर्माणि कृत्वा शिवम् भजन्ति तेषाम् जीवनम् धन्यम् भवति। यानि यानि पुस्तकानि यूयम् इच्छथ तानि तानि पठत। शिवस्य कृपया सर्वे जनाः सुखेन वसन्तु। साधवः सर्वेषाम् परोपकाराय यत्नं कुर्वन्ति। येषाम् न विद्या न तपः न च दानम् तेषाम् जीवितेन किम् अपि फलम् न भवति। येषाम् धनम् अन्नम् च न भवति यूयम् तेभ्यः धनम् अन्नम् च यच्छत। ये परेषाम् उपकाराय यत्नम् कुर्वन्ति तेषाम् जीवनम् धन्यम् भवति। ~~यस्य गृहे~~ यस्मिन् गृहे अतिथीनाम् ब्राह्मणानाम् गुरूणाम् च पूजा न भवति तत् गृहम् श्मशानसदृशम् भवति।

यस्मात् कारणात् त्वम् अद्य पाठशालाम् न गच्छसि तस्मात् एव कारणात् अहम् पाठशालाम् न गच्छामि। यत् यत् कार्यम् सुशीला करोति तत् तत् एव कार्यम् लीला अपि करोति। येन मार्गेण रामः वनम् अगच्छत् तेन एव मार्गेण लक्ष्मणः सीता च वनम् अगच्छताम्। हे शिष्याः! यत् यत् गुरुः आदिशति तत् तत् पालय। विद्याधनम् सर्वेषाम् धनानाम् उत्तमम् भवति। रामदत्तः सर्वेषु बालेषु चतुरतमः भवति।

अभ्यासः

१. नये शब्द:-

सर्वम् - प्रत्येक
पुराणम् - पुराना
पर - दूसरा
श्मशानसदृशम् - श्मशान के समान
चतुरतमः - सब से अधिक चतुर

२. समासों के लिये:—

सर्व, तत, यत शब्दों के लिये पुँल्लिङ्ग तथा नपुंसकलिङ्ग में व्याकरण परिशिष्ट में देखिये।

३. ~~[illegible]~~ पद का काम:—

(क) प्रश्नों के उत्तर दीजिये:—

१. क्या सब बालक पाठशाला गये थे?

२. हर एक पुरानी चीज अच्छी नहीं हो सकती।

३. जिन के पास न विद्या है और न ~~[illegible]~~ तप और न दान वे तो पशु ही हैं।

४. जो जो आप लोग चाहते हो उन को रखिये।

५. इस देश का राजा कौन है, मैं उस को नमस्कार करता हूँ।

६. जिस ~~सड़क~~ मार्ग से तू ग्राम को जायेगा मैं भी उसी मार्ग से ग्राम को जाऊंगा।

सप्तविंशः ~~षड्विंशः~~ पाठः

कालः (संलापः)

सरला — सखि सुशीले! अहोरात्रे कति होराः भवन्ति?

सुशीला — चतुर्विंशतिः होराः।

सरला — कथय, सप्ताहे कति दिनानि भवन्ति?

सुशीला — सप्त। इदम् सप्ताहः इति नामतः एव स्पष्टम्।

~~सुशीला~~ सरला — सुशीले! जानासि सप्ताहे कानि कानि दिनानि भवन्ति? तेषाम् नामानि च कथय।

सुशीला — प्रथमः सोमवारः, ततः मङ्गलवारः, बुधवारः, बृहस्पतिवारः, शुक्रवारः, शनिवारः च। मङ्गलवारम् भौमवारम् अपि वदन्ति, बृहस्पतिम् च गुरुवारम्। शनिवारम् ~~च शनिश्चरवारम्~~ शनैश्चरवारम् अपि च कथयन्ति। रविवासरे विद्यालयेषु, कार्यालयेषु तथा न्यायालयेषु अनध्यायः अवकाशः च भवति। विपणिषु अपि

~~सरला~~ क्रयः विक्रयः न भवति।

सरला — मासे कति सप्ताहाः पक्षाः च भवन्ति?

सुशीला — सरले! सत्यम् एव त्वम् सरला असि। इदम् अपि न जानासि यत् मासे चत्वारः सप्ताहाः भवन्ति। द्वौ च पक्षौ भवतः शुक्लपक्षः, कृष्णपक्षः च। शुक्लपक्षे चन्द्रः वृद्धिं गच्छति, कृष्णपक्षे च क्षीणः भवति।

सरला — ~~वर्षे~~ एकस्मिन् वर्षे कति मासाः भवन्ति के च ऋतवः इति नामतः कथय।

सुशीला — द्वादश मासाः। यथा चैत्रः, वैशाखः, ज्येष्ठः, आषाढः, श्रावणः, भाद्रः, आश्विनः, कार्तिकः, मार्गः, पौषः, माघः, फाल्गुनः च। एवम् पञ्जाबप्रदेशे षड् ऋतवः भवन्ति। यथा ग्रीष्मः, वर्षा, शरत्, हेमन्तः, शिशिरः, वसन्तः च।

द्वौ द्वौ मासौ ऋतुः भवति। यथा वैशाखज्येष्ठौ ग्रीष्मः, आषाढश्रावणौ वर्षाः, भाद्रपदाश्विनौ शरत्, कार्तिक-मार्गौ हेमन्तः, पौषमाघौ शिशिरः, फाल्गुनचैत्रौ वसन्तः च इति।

अभ्यास: द्वारा - चंदा

1. नये शब्द:— अहोरात्रम् – दिन रात
कति – कितने
नामतः – नाम से
विपणिः – बाज़ार
क्रयविक्रय – खरीदना बेचना

2. [illegible] कीजिये:— दिनों, पक्षों, मासों तथा ऋतुओं के नाम स्मरण करो।

3. घर का काम:—

(क). शब्दों के अर्थ लिख कर संस्कृत में वाक्य बनाइये:— अहोरात्रम्, कति, विद्यालय, अवकाशः, षड्।

(ख). अनुवाद कीजिये:—

1. दो दो मासों की एक ऋतु होती है।
2. एक मास में दो पक्ष होते हैं, शुक्ल पक्ष और कृष्ण पक्ष।
3. दिन रात में चौबीस घंटे होते हैं।
4. वर्षा ऋतु में मेघ आकाश में घूमते हैं और जलों को छोड़ते हैं।
5. रविवार को विद्यालयों, कार्यालयों तथा न्यायालयों में अवकाश होता है।

अष्टाविंशः पाठः

प्रकीर्णानि पद्यानि

१ - माता शत्रुः पिता वैरी येन बालो न पाठितः।
न शोभते सभामध्ये हंसमध्ये बको यथा॥

२ - उद्यमेन हि सिध्यन्ति कार्याणि न मनोरथैः।
न हि सुप्तस्य सिंहस्य प्रविशन्ति मुखे मृगाः।

३ - उत्सवे व्यसने चैव दुर्भिक्षे राष्ट्रविप्लवे।
राजद्वारे श्मशाने च यः तिष्ठति स बान्धवः॥

४. यदा सत्संगरहितो भविष्यसि भविष्यसि।
तदा सज्जनगोष्ठीषु पतिष्यसि पतिष्यसि॥

५. - कोऽतिभारः समर्थानां किं दूरं व्यवसायिनाम्।
को विदेशः सविद्यानां कः परः प्रियवादिनाम्॥

६. - बन्धुः को नाम दुष्टानां कुप्यते को न याचितः।
को न हृष्यति वित्तेन कुकृत्ये को न पण्डितः॥

७. क्षमा शत्रौ च मित्रे च यतीनाम् एव भूषणम्।
अपराधिषु सत्त्वेषु नृपाणां सैव दूषणम्॥

८. भर्ता हि परमं नार्या भूषणं भूषणैर्विना।
एषा विरहिता तेन शोभनाऽपि न शोभते॥

अभ्यास

१ - नये शब्द: —

बक - बगला
उद्यम - परिश्रम
मनोरथ - मन की इच्छा
व्यसन - विपत्तिः
गोष्ठी - सभा
समर्थ - सामर्थ्यवाला
व्यवसायिनाम् - परिश्रम करने वालों के लिये
दुर्भिक्ष - दुष्काल
सविद्यानाम् - विद्या वालों के लिये

प्रियवादिनाम् - प्यारा बोलने वालों के लिये
हृष्यति - घमण्ड करता है
भर्ता - स्वामी

अभ्यास: दूसरा घंटा

१. नए शब्द:— अहोरात्र — दिन रात
क्रीत — खरीदे
गमन: — जाने
विपणि — बाज़ार
क्रयविक्रय — खरीदना बेचना

२. स्मरण कीजिये:— दिनों, पक्षों, मासों तथा ऋतुओं के नाम स्मरण करो।

३. घर का काम:—

(क). शब्दों के अर्थ लिख कर संस्कृत में वाक्य बनाईये:—
अहोरात्र, क्रीत, निद्राहेतु, अवकाश:, षड्।

(ख) अनुवाद कीजिये:—
१. दो दो मासों की एक ऋतु होती है।
२. एक मास में दो पक्ष होते हैं, शुक्ल पक्ष और कृष्ण पक्ष।
३. दिन रात में चौबीस घंटे होते हैं।
४. वर्षा ऋतु में मेघ आकाश में घूमते हैं और जलों को छोड़ते हैं।
५. रविवार को विद्यालयों, कार्यालयों तथा न्यायालयों में अवकाश होता है।

अष्टाविंशः पाठः

प्रकीर्णानि पद्यानि

१ - माता शत्रुः पिता वैरी येन बालो न पाठितः।
न शोभते सभामध्ये हंसमध्ये बको यथा॥

२ - उद्यमेन हि सिध्यन्ति कार्याणि न मनोरथैः।
न हि सुप्तस्य सिंहस्य प्रविशन्ति मुखे मृगाः।

३ - उत्सवे व्यसने चैव दुर्भिक्षे राष्ट्रविप्लवे।
राजद्वारे श्मशाने च यः तिष्ठति स बान्धवः॥

४ यदा सत्संगरहितो भविष्यसि भविष्यसि।
तदाऽसज्जनगोष्ठीषु पतिष्यसि पतिष्यसि॥

५ - कोऽतिभारः समर्थानां किं दूरं व्यवसायिनाम्।
को विदेशः सविद्यानां कः परः प्रियवादिनाम्॥

६ - बन्धुः को नाम दुष्टानां कुप्यते को न याचितः।
को न हृष्यति वित्तेन कुकृत्ये को न पण्डितः॥

७ क्षमा शत्रौ च मित्रे च यतीनाम् एव भूषणम्।
अपराधिषु सत्त्वेषु नृपाणां सैव दूषणम्॥

८ भर्ता हि परमं नार्या भूषणं भूषणैर्विना।
एषा विरहिता तेन शोभनाऽपि न शोभते॥

अभ्यास

१ - नये शब्दः —

बक - बगला
उद्यम - परिश्रम
मनोरथ - मन की इच्छा
व्यसन - विपत्ति
गोष्ठी - सभा
समर्थ - सामर्थ्यवाला
व्यवसायिनाम् - परिश्रम करनेवालों के लिये
दुर्भिक्ष - अकाल
सविद्यानाम् - विद्यावालों के लिये

प्रियवादिनाम् - प्यारा बोलनेवालों के लिये।
हृष्यति - घमण्ड करता है
यति - संन्यासी

2. सन्धियाँ :—

सदाऽतिस्नानमलोक्षितेषु = सदा + अतिस्नानमलोक्षितेषु

कोऽतिभार: = क: + अतिभार:

सैव = सा + एव

सुवर्णैर्विना = सुवर्णैः + विना

श्रीमताऽयं = श्रीमता + अयं।

2. पाठ का ज्ञान :—

(क) कोई दो श्लोक कण्ठस्थ करो :—

(ख) अन्तिम दो श्लोकों का अनुवाद हिन्दी में लिखो।

एकोनत्रिंशः पाठः

(उपसर्ग, अस्मद्, युष्मद्)

अद्य अहम् चण्डीगढम् गमिष्यामि। किम् त्वम् तत्र ग्रीष्मावकाशे आगमिष्यसि? रामः मम समयः अवगच्छति, किन्तु त्वम् अपि अवगच्छति। अहम् तत्र मनोहराणि पुष्पाणि आनेष्यामि। किम् त्वम् मह्यम् मधुराणि फलानि आनेष्यसि। मम ~~पिता~~ जनकः प्रातः उद्याने विहरति, किम् तव मातुलः अपि प्रातः उद्याने विहरति। अस्माकम् विद्यालये एकः पुस्तकालयः अस्ति। किम् युष्माकम् विद्यालये अपि कश्चित् पुस्तकालयः अस्ति।

अहम् अनुभवामि यत् अद्य वायुः शीतः अस्ति। शिष्याः सर्वदा गुरुम् प्रणमन्ति। यदा मम सहोदरः गृहात् बहिः निर्गच्छति तदा अहम् गृहम् प्रविशामि। ये यत्नम् कुर्वन्ति, ते फलम् अधिगच्छन्ति। यदा धर्मः क्षीणः भविष्यति, तदा विष्णुः सम्भविष्यति। क्षत्रियाः राक्षसान् संहरन्ति। ये लोकाः परेषाम् धनानि अपहरन्ति ते पापाः एव सन्ति। यदा मम देशस्य वीराः युद्धाय गमिष्यन्ति तदा रिपवः पराभविष्यन्ति। गङ्गा यमुना च हिमालयात् सम्भवतः।

व्याकरण

1. उपसर्गः:—

12

गम् = जाना	आ + गम्	=	आना
	अव + गम्	=	जानना
नी = ले जाना	आ + नी	=	लाना
हृ (हर्) चुराना	वि + हृ	=	घूमना
	सं + हृ	=	नाश करना
नम् = नमस्कार करना	प्र + नम्	=	प्रणाम करना
भू = होना	सम् + भू	=	उत्पन्न होना
	प्र + भू	=	समर्थ होना
	परा + भू	=	हार मानना

2. सामान्य निर्देश:— अस्मद्, युष्मद् शब्दों के रूप व्याकरण पाठशाला में दीजिये

2. घर के लिये काम :—

अनुवाद करो :—

1. मैं बाजार से पुस्तकें लाऊंगा क्या तू भी लायेगा।
2. हिमालय ~~पहाड़~~ से गंगा तथा यमुना निकलती हैं।
3. जब वीर लोग प्रहार करते हैं तो दुष्ट विपक्षी नष्ट हो जाते हैं।
4. हम और हमारे मित्र प्रातः भ्रमण करते हैं क्या तुम भी हमारे साथ चलोगे?
5. हम में राम सब से अधिक चतुर है तुम में कौन सब से अधिक चतुर है?

त्रिंशः पाठः

~~(सुभाष, प्रभाकर)~~

द्वौ छात्रौ

यज्ञदत्तः - ननु सोमदत्त, कुशली त्वम्?

सोमदत्तः - कुशलः अस्मि परमेश्वरस्य कृपया।

यज्ञदत्तः - कस्यां कक्षायाम् पठसि?

सोमदत्तः - अहम् षष्ठी-कक्षायाम् पठामि।

यज्ञदत्तः - कति छात्राः सन्ति कक्षायाम्?

सोमदत्तः - मम कक्षायाम् चत्वारिंशत् छात्राः सन्ति।

यज्ञदत्तः - किम् किम् पठसि त्वम्?

सोमदत्तः - अहम् आङ्ग्ल-भाषाम्, गणितम्, सामान्य विज्ञानम्, सामाजिकम् ज्ञानम्, हिंदी भाषाम्, पञ्जाबी-भाषाम् च पठामि।

यज्ञदत्तः - किम् त्वम् संस्कृतम् न पठसि?

सोमदत्तः आम्, मित्र! पठामि संस्कृतम् अपि।

यज्ञदत्तः यूयम् तत्र किम् संस्कृतपुस्तकम् पठत?

सोमदत्तः वयम् ...... पठामः।

यज्ञदत्तः तव विद्यालये कति अध्यापकाः सन्ति?

सोमदत्तः तत्र एकादश अध्यापकाः सन्ति।

यज्ञदत्तः कः युष्मान् संस्कृतम् पाठयति?

सोमदत्तः प्रधानाध्यापकः स्वयम् अस्मान् संस्कृतम् पाठयति।

यज्ञदत्तः कः युष्माकम् प्रधानाध्यापकः?

सोमदत्तः श्री जयदेव पाराशरः अस्माकम् प्रधानाध्यापकः अस्ति।

यज्ञदत्तः कति कक्षाः सन्ति तव विद्यालये?

सोमदत्तः एकादश कक्षाः सन्ति मम विद्यालये।

यज्ञदत्तः ननु संस्कृते भाषणं कर्तुम् प्रभवसि?

सोमदत्तः अथ किम्, सरलया भाषया भाषणं कर्तुम् समर्थः अस्मि।

यज्ञदत्तः अनुजानीहि गमनाय इदानीम्।

सोमदत्तः बाढम्। धन्यवादाः, गच्छ पुनर्दर्शनाय, शुभाः ते पन्थानः सन्तु।

अभ्यास

1. नये शब्द :— कुशली — कुशल पूर्वक
ननु — (प्रश्न के अर्थ में आता है)
चलचित्रम् — पाताल
आङ्गलभाषा — अंग्रेजी
अथ किम् — हाँ
अनुजानीहि — आज्ञा दीजिये
बहुशः — बहुत
पन्थानः — मार्ग (बहुवचन)
पुनर्दर्शनाय — फिर ~~मिलना~~ देखने को

2. ~~क~~ दो बालक इस विषय का अभिनय करें।

3. पद का ज्ञान :—

(क) वाक्यों में प्रयोग करो :—

कुशली, ननु, अथ किम्, पुस्तकम्, अनुजानीहि, पुनर्दर्शनाय।

(ख) अनुवाद कीजिये :—

तुम किस विद्यालय में पढ़ते हो। वहाँ कितनी कक्षायें हैं। तुम्हारी पाठशाला में कितनी अध्यापिकायें हैं। क्या तुम्हारी तुम संस्कृत भी पढ़ते हो। तुम्हें संस्कृत कौन पढ़ाता है। तुम्हारे प्रधानाध्यापक का क्या नाम है। फिर आइये फिर मिलियेगा।

एकत्रिंशः पाठः

स्मरणीयानि पद्यानि

१ - त्वमेव माता च पिता त्वम् एव
त्वम् एव बन्धुः च सखा त्वम् एव।
त्वम् एव विद्या द्रविणं त्वम् एव
त्वम् एव सर्वं मम देवदेव॥

२. सा भार्या या गृहे दक्षा
सा भार्या या प्रजावती।
सा भार्या या पतिप्राणा
सा भार्या या पतिव्रता॥

३ - यो नात्मजे न च गुरौ न च भृत्यवर्गे
दीने दयां न कुरुते न च बन्धुवर्गे।
किं तस्य जीवितफलेन लोके
काकोऽपि जीवति चिराय बलिं च भुङ्क्ते॥

४. येषां न विद्या न तपो न दानं
ज्ञानं न शीलं न गुणो न धर्मः।
ते मर्त्यलोके भुवि भारभूताः
मनुष्यरूपेण मृगाः चरन्ति॥

५. भोगा न भुक्ता वयम् एव भुक्ताः
तपो न तप्तं वयम् एव तप्ताः।
कालो न यातो वयम् एव याताः
तृष्णा न जीर्णा वयम् एव जीर्णाः॥

६. विद्या विवादाय धनं मदाय
शक्तिः परेषां परिपीडनाय।
खलस्य साधोर्विपरीतम् एतद्
ज्ञानाय दानाय च रक्षणाय॥

१- मूलं भुजङ्गैः शिखरं प्लवङ्गैः
शाखा विहङ्गैः कुसुमानि भृङ्गैः।
आसेव्यते दुर्जनैः समस्तैः
न चन्दनं मुञ्चति शीतलत्वम्॥

२. गुरुः न स स्यात् स्वजनो न स स्यात्
पिता न स स्यात् जननी न सा स्यात्।
दैवं न तत् स्यात् न पतिः च स स्यात्
न मोचयेत् यः समुपेतमृत्युम्॥

अभ्यास

१ - कठिन शब्द:—

सखा - मित्र
प्रविश - घुस
देवदेव - हे देवताओं के देवता
दक्ष - चतुर
प्रजावती - सन्तान वाली
पिपीलिका - चींटा
भुङ्क्ते - खाता है
भुवि - पृथ्वी पर
मृग - पशु
विवाद - झगड़ा
भुजङ्गः - साँप
प्लवङ्गः - बन्दर
विहङ्गः - पक्षी
भृङ्गः - भौंरे
समुपेतमृत्युम् - आई हुई मृत्यु को

२. सब पद्यों को कण्ठस्थ करो।

द्वात्रिंशः पाठः

कथा

स्वामिभक्ता धात्री

यदा महाराणः संग्रामसिंहः स्वर्गम् अगच्छत् तदा तस्य ज्येष्ठः पुत्रः विक्रमादित्यः राज्ये अभिषिक्तः। परम् सः अयोग्यः आसीत्। सामन्ताः तम् राजासनात् अपानयन्। उत्तराधिकारी कनिष्ठः कुमारः उदयसिंहः तावत् शिशुः एव अभवत्। दासीपुत्रः बनवीरः शिशोः राजकुमारस्य संरक्षकः अभवत्। सः एव सर्वाणि राजकार्याणि निरवहत्।

बनवीरस्य हृदये राज्यलोभः उदगच्छत्। सः एकदा निशायाम् शयानम् विक्रमादित्यम् असिना अहनत्। कश्चित् सेवकः गत्वा उदयसिंहस्य धात्रीम् पन्नाम् प्राबोधयत्। सा च शीघ्रम् एव राजशिशुम् उदयसिंहम् फलकरण्डिकायाम् निधाय, ताम् च गृहीत्वा सरितायाः तटे प्रतीक्षितुं भृत्यम् आदिशत्। सः अपि ताम् करण्डिकाम् गृहीत्वा सत्वरम् नदीतटम् प्रातिष्ठत। धात्री च तदा महद्-धैर्येण स्वपुत्रम् राजशिशोः पर्यङ्के न्यवेशयत्।

अचिरेण एव बनवीरः कृपाणम् आदाय राजप्रासादम् आविशत्, अपृच्छत् च 'कुत्र अस्ति उदयसिंहः?' इति। सा च हृदयं पाषाणसमम् विधाय कम्पितेन करेण पर्यङ्कं संकेतम् अकरोत्।

एकेन एव प्रहारेण बनवीरः शिशोः द्वे खण्डे अकरोत्, निरगच्छत् च सत्वरम् एव। धात्री च पुत्रस्य शवम् क्रोडे निधाय नदीतटम् अगच्छत् तम् च तत्र जले अपातयत्। इत्थम् सा स्वामिभक्ता पन्ना स्वपुत्रं परित्यज्य स्वामिसुतम् अरक्षत्। काले गते उदयसिंहः युवा अभवत्। सः बनवीरम् अदण्डयत्। धात्रीं च ताम् अपूजयत्। ततः स चिरम् धर्मेण प्रजाः अपालयत्।

धन्या सा स्वामिभक्ता पन्ना या स्वपुत्रम् दत्त्वा स्वामिसुतम् अरक्षत्।

अभ्यासः

1. नवशब्दाः —
   - धात्री — धाया
   - अपनी — दूर कर देना
   - शयानम् — सोते हुए को
   - करण्डिका — डलिया
   - निधाय — रख कर
   - भृत्य — नौकर
   - पर्यङ्क — पलंग

त्रयस्त्रिंशः पाठः

वर्णाः तेषाम् उच्चारणस्थानानि च

गुरुः — हे शिष्य संस्कृते कति वर्णाः सन्ति ?

शिष्यः — गुरो ! संस्कृते अष्टाचत्वारिंशत् वर्णाः सन्ति। त्रयोदश स्वराः, पञ्चत्रिंशत् व्यञ्जनानि च। व्यञ्जनेषु पञ्चविंशतिः स्पर्शाः, चत्वारः अन्तःस्थाः, चत्वारः ऊष्माः, द्वौ अनुस्वारविसर्गौ च।

गुरुः — हे शिष्य ! स्वराणाम् किम् लक्षणम् अस्ति।

शिष्य — स्वयं राजन्ते इति स्वराः। येषाम् वर्णानाम् उच्चारणे अन्येषाम् वर्णानाम् साहाय्यस्य अपेक्षा न भवति ते स्वराः सन्ति। एतेषु अ, इ, उ, ऋ, लृ इति पञ्च लघुस्वराः आ, ई, ऊ, ॠ, ए, ऐ, ओ, औ इति अष्ट दीर्घस्वराः।

गुरुः — भो शिष्य ! व्यञ्जनानि कानि सन्ति ?

शिष्यः — येषाम् वर्णानाम् उच्चारणम् स्वराणाम् साहाय्येन भवति तानि व्यञ्जनानि भवन्ति। ते क्रमेण इत्थं भवन्ति —

स्पर्शाः — कवर्गः = कु : — क ख ग घ ङ
चवर्गः = चु : — च छ ज झ ञ
टवर्गः = टु : — ट ठ ड ढ ण
तवर्गः = तु : — त थ द ध न
पवर्गः = पु : — प फ ब भ म

अन्तःस्थाः — य र ल व

ऊष्माः — श ष स ह

अनुस्वारः = ं , विसर्गश्च (ः)।

गुरुः — हे वत्स ! तेषाम् वर्णानाम् उच्चारण-स्थानानि अपि वर्णय।

शिष्यः — हे गुरो ! वर्णानाम् उच्चारणस्थानानि अपि

कथयामि, शृणुत।

अ, क, कु, ह, विसर्जनीयानाम् कण्ठः।
इ, ई, चु, य, शानाम् तालुः।
ऋ, टु, र षाणाम् मूर्धा।
लृ, तु, ल, सानाम् दन्ताः।
उ, ऊ, पु, इति स्वराणाम् ओष्ठौ।
वकारस्य दन्तोष्ठम्।
ए, ऐ इति स्वरयोः कण्ठतालुः।
ओ, औ इति स्वरयोः कण्ठोष्ठम्
अनुस्वारस्य नासिका।

गुरुः — साधु वत्स साधु। त्वया पाठः सम्यक् स्मृतः इति।

व्याकरण - परिशिष्ट

अथ
व्याकरण - परिशिष्ट

व्याकरण :- व्याकरण वह शास्त्र है जो हमें शुद्ध भाषण करने तथा शुद्ध लिखने का ज्ञान कराता है।

वर्ण :- वर्ण उस छोटी से छोटी ध्वनि को कहते हैं, जिसके और खण्ड न हो सकें।

वर्णमाला

स्वर { अ, इ, उ, ऋ, लृ — ह्रस्वस्वर
आ, ई, ऊ, ॠ, ए, ऐ, ओ, औ — दीर्घस्वर

व्यञ्जन :-

स्पर्श —

कवर्ग (=कु) - क ख ग घ ङ
चवर्ग (=चु) - च छ ज झ ञ
टवर्ग (=टु) - ट ठ ड ढ ण
तवर्ग (=तु) - त थ द ध न
पवर्ग (=पु) - प फ ब भ म

अन्तःस्थ - य र ल व

ऊष्म - श ष स ह

अयोगवाह - ं (अनुस्वार), ः (विसर्ग).

उच्चारण स्थान

पृ. 106

उच्चारण स्थान	स्वर	व्यञ्जन		
		स्पर्श	अन्तःस्थ	ऊष्म
कण्ठ	अ, आ	क ख ग घ ङ	—	ह, (:)
तालु	इ, ई	च छ ज झ ञ	य	श
मूर्धा	ऋ, ॠ	ट, ठ, ड, ढ, ण	र	ष
दन्त	लृ	त थ, द, ध, न	ल	स
ओष्ठ	उ, ऊ	प फ ब भ म	—	—
कण्ठतालु	ए, ऐ	—	—	—
कण्ठोष्ठ	ओ, औ	—	—	—
दन्तोष्ठ	—	—	व	—
नासिका	—	ं (अनुस्वार)		

कारक

कारक :- वाक्य में जिस के साथ क्रिया का अन्वय होता है उसे कारक कहते हैं। जैसे 'बालकः पठति'। इस वाक्य में 'पठति' क्रिया का अन्वय 'बालकः' के साथ है इस लिये 'बालकः' कारक है। इसी प्रकार 'नृपः ब्राह्मणेभ्यः धनम् यच्छति' इस वाक्य में 'नृपः', 'ब्राह्मणेभ्यः' तथा 'धनम्' कारक हैं।

कारक छः होते हैं :—

१- कर्ता, २- कर्म, ३- करण, ४- सम्प्रदान, ५- अपादान, ६- अधिकरण।

नोट :- 'सम्बन्ध' तथा 'सम्बोधन' का क्रिया के साथ कोई अन्वय नहीं होता - जैसे रामस्य पुस्तकम् (राम की पुस्तक), हे राम! इस लिये 'सम्बन्ध' तथा 'सम्बोधन' कारक नहीं कहलाते।

विभक्ति :- जिस प्रत्यय से वचन और कारक का बोध हो उसे विभक्ति कहते हैं। जैसे नरः = एक मनुष्य ने। नरौ = दो मनुष्यों ने। नराः = अनेक मनुष्यों ने।

विभक्तियां सात होती हैं :—

१. प्रथमा, २- द्वितीया, ३- तृतीया, ४- चतुर्थी, ५- पञ्चमी, ६- षष्ठी, ७- सप्तमी।

	कारक	विभक्ति	
१.	कर्ता	प्रथमा	ने
२.	कर्म	द्वितीया	को
३-	करण	तृतीया	से, के द्वारा
४.	सम्प्रदान	चतुर्थी	के लिये
५.	अपादान	पञ्चमी	से
६.	(सम्बन्ध)	षष्ठी	का, के, की
७.	अधिकरण	सप्तमी	में, पर
८.	(सम्बोधन)	प्रथमा	हे, अरे

वचन

संस्कृत में तीन वचन होते हैं :—

१- एकवचन, २- द्विवचन, ३. बहुवचन.

एक के लिये एकवचन का प्रयोग होता है। जैसे - बालः गच्छति। दो के लिये द्विवचन का प्रयोग होता है। जैसे - बालौ गच्छतः। तीन तथा उस से अधिक के लिये बहुवचन का प्रयोग होता है। जैसे बालाः गच्छन्ति।

शब्द रूप

अकारान्त पुंल्लिङ्ग — बाल (= बालक)

		एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
कर्ता	प्रथमा	बाल:	बालौ	बाला:
कर्म	द्वितीया	बालम्	बालौ	बालान्
करण	तृतीया	बालेन	बालाभ्याम्	बालैः
सम्प्रदान	चतुर्थी	बालाय	बालाभ्याम्	बालेभ्य:
अपादान	पञ्चमी	बालात्	बालाभ्याम्	बालेभ्य:
सम्बन्ध	षष्ठी	बालस्य	बालयो:	बालानाम्
अधिकरण	सप्तमी	बाले	बालयो:	बालेषु
	सम्बोधन	हे बाल!	हे बालौ!	हे बाला:!

अकारान्त नपुंसकलिङ्ग — फल

कर्ता	प्रथमा	फलम्	फले	फलानि
कर्म	द्वितीया	फलम्	फले	फलानि

(शेष बाल की तरह).

आकारान्त स्त्रीलिङ्ग — बाला (= लड़की)

प्रथमा	बाला	बाले	बाला:
द्वितीया	बालाम्	"	"
तृतीया	बालया	बालाभ्याम्	बालाभि:
चतुर्थी	बालायै	"	बालाभ्य:
पञ्चमी	बालाया:	"	"
षष्ठी	"	बालयो:	बालानाम्
सप्तमी	बालायाम्	"	बालासु
सं०	हे बाले!	हे बाले!	हे बाला:!

इकारान्त पुंल्लिङ्ग — मुनि

प्रथमा	मुनि:	मुनी	मुनय:
द्वितीया	मुनिम्	"	मुनीन्
तृतीया	मुनिना	मुनिभ्याम्	मुनिभि:
चतुर्थी	मुनये	"	मुनिभ्य:
पञ्चमी	मुने:	"	"
षष्ठी	"	मुन्यो:	मुनीनाम्
सप्तमी	मुनौ	"	मुनिषु
सं०	हे मुने!	हे मुनी!	हे मुनय:!

उकारान्त पुंलिङ्ग

साधु (= सज्जन पुरुष)

प्रथमा	साधुः	साधू	साधवः
द्वितीया	साधुम्	साधू	साधून्
तृतीया	साधुना	साधुभ्याम्	साधुभिः
चतुर्थी	साधवे	"	साधुभ्यः
पञ्चमी	साधोः	"	"
षष्ठी	"	साध्वोः	साधूनाम्
सप्तमी	साधौ	"	साधुषु
सं०	हे साधो!	हे साधू!	हे साधवः!

इकारान्त नपुंसकलिङ्ग

वारि (=जल)

प्रथमा	वारि	वारिणी	वारीणि
द्वितीया	"	"	"
तृतीया	वारिणा	वारिभ्याम्	वारिभिः
चतुर्थी	वारिणे	"	वारिभ्यः
पञ्चमी	वारिणः	"	"
षष्ठी	"	वारिणोः	वारीणाम्
सप्तमी	वारिणि	"	वारिषु
सं०	वारे! वारि!	वारिणी	वारीणि

इकारान्त नपुंसकलिङ्ग

दधि (= दही)

प्रथमा	दधि	दधिनी	दधीनि
द्वितीया	"	"	"
तृतीया	दध्ना	दधिभ्याम्	दधिभिः
चतुर्थी	दध्ने	"	दधिभ्यः
पञ्चमी	दध्नः	"	"
षष्ठी	"	दध्नोः	दध्नाम्
सप्तमी	दध्नि, दधनि	"	दधिषु
सं०	हे दधे! हे दधि	हे दधिनी!	हे दधीनि!

उकारान्त नपुंसकलिङ्ग
मधु (= शहद)

कर्ता -	प्रथमा	मधु	मधुनी	मधूनि
कर्म -	द्वितीया	"	"	"
करण -	तृतीया	मधुना	मधुभ्याम्	मधुभिः
सम्प्रदान -	चतुर्थी	मधुने	"	मधुभ्यः
अपादान -	पञ्चमी	मधुनः	"	"
सम्बन्ध	षष्ठी	"	मधुनोः	मधूनाम्
अधिकरण	सप्तमी	मधुनि	"	मधुषु
	सं०	हे मधो! हे मधु!	हे मधुनी!	हे मधूनि!

सर्वनाम
पुँल्लिङ्ग - सर्व (= सब)

प्रथमा	सर्वः	सर्वौ	सर्वे
द्वितीया	सर्वम्	"	सर्वान्
तृतीया	सर्वेण	सर्वाभ्याम्	सर्वैः
चतुर्थी	सर्वस्मै	"	सर्वेभ्यः
पञ्चमी	सर्वस्मात्	"	"
षष्ठी	सर्वस्य	सर्वयोः	सर्वेषाम्
सप्तमी	सर्वस्मिन्	"	सर्वेषु

~~सं०~~

नपुंसकलिङ्ग

प्रथमा	सर्वम्	सर्वे	सर्वाणि
द्वितीया	"	"	"

शेष पुँल्लिङ्गवत्

पुं० - किम्

प्रथमा	कः	कौ	के
द्वितीया	कम्	"	कान्
तृतीया	केन	काभ्याम्	कैः
चतुर्थी	कस्मै	"	केभ्यः
पञ्चमी	कस्मात्	"	"
षष्ठी	कस्य	कयोः	केषाम्
सप्तमी	कस्मिन्	"	केषु

नपुंसकलिङ्ग

प्रथमा +	किम्	के	कानि
द्वितीया	"	"	"

शेष पुंल्लिङ्गवत्

पुं० तद् (= वह)

प्रथमा	सः	तौ	ते
द्वितीया	तम्	"	तान्
तृतीया	तेन	ताभ्याम्	तैः
चतुर्थी	तस्मै	"	तेभ्यः
पञ्चमी	तस्मात्	"	"
षष्ठी	तस्य	तयोः	तेषाम्
सप्तमी	तस्मिन्	"	तेषु

नपुंसकलिङ्ग

प्रथमा	तत्	ते	तानि
द्वितीया	"	"	"

शेष पुंल्लिङ्गवत्

पुं० यत् (= जो)

प्रथमा	यः	यौ	ये
द्वितीया	यम्	"	यान्
तृतीया	येन	याभ्याम्	यैः
चतुर्थी	यस्मै	"	येभ्यः
पञ्चमी	~~[illegible]~~ यस्मात्	"	"
षष्ठी	यस्य	ययोः	येषाम्
सप्तमी	यस्मिन्	"	येषु

नपुंसकलिङ्ग

प्रथमा	यत्	ये	यानि
द्वितीया	"	"	"

शेष पुंल्लिङ्गवत्

अस्मद्

प्रथमा	अहम्	आवाम्	वयम्
द्वितीया	माम्	"	अस्मान्
तृतीया	मया	आवाभ्याम्	अस्माभिः
चतुर्थी	मह्यम्	"	अस्मभ्यम्
पञ्चमी	मत्	"	अस्मत्
षष्ठी	मम	आवयोः	अस्माकम्
सप्तमी	मयि	"	अस्मासु

युष्मद्

प्रथमा	त्वम्	युवाम्	यूयम्
द्वितीया	त्वाम्	युवाम्	युष्मान्
तृतीया	त्वया	युवाभ्याम्	युष्माभिः
चतुर्थी	तुभ्यम्	"	युष्मभ्यम्
पञ्चमी	त्वत्	"	युष्मत्
षष्ठी	तव	युवयोः	युष्माकम्
सप्तमी	त्वयि	"	युष्मासु

तिङन्त

काल

संस्कृत में तीन काल होते हैं :—

१— भूतकाल
२— वर्तमान काल
३- भविष्यत काल

भूतकाल के लिये लङ् लकार का प्रयोग होता है। वर्तमान काल के लिये लट् लकार का प्रयोग होता है भविष्यत काल के लिये लृट् लकार का प्रयोग होता है। इसके अतिरिक्त आज्ञा आदि के अर्थ में लोट् लकार, और चाहिये आदि के अर्थ में विधिलिङ् का प्रयोग होता है।

पुरुष

तीन पुरुष होते हैं —
१- प्रथम पुरुष
२- मध्यम पुरुष
३. उत्तम पुरुष

प्रत्येक पुरुष में तीन तीन वचन होते हैं। एकवचन द्विवचन तथा बहुवचन।

संस्कृत में तीनों लिङ्गों के लिये एक ही क्रिया का प्रयोग होता है।

धातु रूप

भ्वादि गण — पठ् = पढ़ना

लट् लकार (वर्तमान काल) के प्रत्यय

* पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	ति	तः	अन्ति
मध्यम पुरुष	सि	थः	थ
उत्तम पुरुष	आमि	आवः	आमः

लट् लकार के रूप

प्रथम पुरुष	पठति	पठतः	पठन्ति
मध्यम पुरुष	पठसि	पठथः	पठथ
उत्तम पुरुष	पठामि	पठावः	पठामः

लङ् लकार (भूतकाल) के प्रत्यय

प्रथम पुरुष	त्	ताम्	अन्
मध्यम पुरुष	:	तम्	त
उत्तम पुरुष	अम्	आव	आम

लङ् लकार के रूप

ध्यान :- लङ् लकार धातु से पहिले अ जोड़ा जाता है।

प्रथम पुरुष	अपठत्	अपठताम्	अपठन्
मध्यम पुरुष	अपठः	अपठतम्	अपठत
उत्तम पुरुष	अपठम्	अपठाव	अपठाम

लोट् लकार के प्रत्यय

प्रथम पुरुष	तु	ताम्	अन्तु
मध्यम पुरुष	–	तम्	त
उत्तम पुरुष	आनि	आव	आम

लोट् लकार के रूप

प्रथम पुरुष	पठतु	पठताम्	पठन्तु
मध्यम पुरुष	पठ	पठतम्	पठत
उत्तम पुरुष	पठानि	पठाव	पठाम

विधिलिङ् के प्रत्यय

प्रथम पुरुष	ईत्	ईताम्	ईयुः
मध्यम पुरुष	ईः	ईतम्	ईत
उत्तम पुरुष	ईयम्	ईव	ईम

सूचना :- लट्, लङ्, लोट् तथा विधिलिङ् में धातु तथा प्रत्यय के बीच में शप् विकरण जोड़ा जाता है। जैसे पठ् + शप् + ति = पठति।

अस्मद्

प्रथमा	अहम्	आवाम्	वयम्
द्वितीया	माम्	"	अस्मान्
तृतीया	मया	आवाभ्याम्	अस्माभिः
चतुर्थी	मह्यम्	"	अस्मभ्यम्
पञ्चमी	मत्	"	अस्मत्
षष्ठी	मम	आवयोः	अस्माकम्
सप्तमी	मयि	"	अस्मासु

युष्मद्

प्रथमा	त्वम्	युवाम्	यूयम्
द्वितीया	त्वाम्	युवाम्	युष्मान्
तृतीया	त्वया	युवाभ्याम्	युष्माभिः
चतुर्थी	तुभ्यम्	"	युष्मभ्यम्
पञ्चमी	त्वत्	"	युष्मत्
षष्ठी	तव	युवयोः	युष्माकम्
सप्तमी	त्वयि	"	युष्मासु

तिङन्त

काल

संस्कृत में तीन काल होते हैं :—

१ — भूतकाल
२ — वर्तमान काल
३ - भविष्यत काल

भूतकाल के लिये लङ् लकार का प्रयोग होता है। वर्तमान काल के लिये लट् लकार का प्रयोग होता है। भविष्यत काल के लिये लृट् लकार का प्रयोग होता है। इस के अतिरिक्त आज्ञा आदि के अर्थ में लोट् लकार, और चाहिये आदि के अर्थ में विधिलिङ् का प्रयोग होता है।

पुरुष

तीन पुरुष होते हैं —
१ - प्रथम पुरुष
२ - मध्यम पुरुष
३. उत्तम पुरुष

प्रत्येक पुरुष में तीन तीन वचन होते हैं। एकवचन द्विवचन तथा बहुवचन।

संस्कृत में तीनों लिङ्गों के लिये एक ही क्रिया का प्रयोग होता है।

धातु रूप

भ्वादि गण पठ् = पढ़ना

लट् लकार (वर्तमान काल) के प्रत्यय

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	ति	तः	अन्ति
मध्यम पुरुष	सि	थः	थ
उत्तम पुरुष	आमि	आवः	आमः

सूचना :- लट्, लङ्, लोट् तथा विधिलिङ् में धातु तथा प्रत्यय के बीच में अ जोड़ा जाता है। जैसे पठ् + अ + ति = पठति।

लट् लकार के रूप

प्रथम पुरुष	पठति	पठतः	पठन्ति
मध्यम पुरुष	पठसि	पठथः	पठथ
उत्तम पुरुष	पठामि	पठावः	पठामः

लङ् लकार (भूतकाल) के प्रत्यय

प्रथम पुरुष	त्	ताम्	अन्
मध्यम पुरुष	:	तम्	त
उत्तम पुरुष	अम्	आव	आम

लङ् लकार के रूप

सूचना :- लङ् लकार धातु से पहिले अ जोड़ा जाता है।

प्रथम पुरुष	अपठत्	अपठताम्	अपठन्
मध्यम पुरुष	अपठः	अपठतम्	अपठत
उत्तम पुरुष	अपठम्	अपठाव	अपठाम

लोट् लकार के प्रत्यय

प्रथम पुरुष	तु	ताम्	अन्तु
मध्यम पुरुष	–	तम्	त
उत्तम पुरुष	आनि	आव	आम

लोट् लकार के रूप

प्रथम पुरुष	पठतु	पठताम्	पठन्तु
मध्यम पुरुष	पठ	पठतम्	पठत
उत्तम पुरुष	पठानि	पठाव	पठाम

विधिलिङ् के प्रत्यय

प्रथम पुरुष	ईत्	ईताम्	ईयुः
मध्यम पुरुष	ईः	ईतम्	ईत
उत्तम पुरुष	ईयम्	ईव	ईम

विधि लिङ् के रूप

प्रथम पुरुष	पठेत्	पठेताम्	पठेयुः
मध्यम पुरुष	पठेः	पठेतम्	पठेत
उत्तम पुरुष	पठेयम्	पठेव	पठेम

लृट् लकार (भविष्यत् काल) के प्रत्यय

प्रथम पुरुष	स्यति	स्यतः	स्यन्ति
मध्यम पुरुष	स्यसि	स्यथः	स्यथ
उत्तम पुरुष	स्यामि	स्यावः	स्यामः

लृट् लकार के रूप

सूचना :- लृट् लकार में कुछ धातुओं में प्रत्यय से पहले इ जोड़ दिया जाता है और इसी कारण से स्यति का इष्यति हो जाता है जैसे पठ् + इ + स्यति = पठिष्यति। ऐसी धातुओं को सेट् धातुएं कहते हैं। जिन धातुओं में प्रत्यय से पहले इ नहीं जुड़ता उन्हें अनिट् धातु कहते हैं।

प्रथम पुरुष	पठिष्यति	पठिष्यतः	पठिष्यन्ति
मध्यम पुरुष	पठिष्यसि	पठिष्यथः	पठिष्यथ
उत्तम पुरुष	पठिष्यामि	पठिष्यावः	पठिष्यामः

पत्, ~~लिख्~~, खेल्, क्रीड्, वद्, चर्, हस्, चल्, खाद्, भू (भव्), स्मर्, धाव्, रक्ष्, भ्रम्, आदि धातुओं के रूप भी लट् आदि लकारों में पठ् धातु की तरह हो जाते हैं।

कुछ धातु ऐसे हैं जो लट्, लङ्, लोट् तथा विधिलिङ् में बदल जाते हैं। जैसे गम् को गच्छ्, पा को पिब्, स्था को तिष्ठ्, दा को यच्छ्, दृश् को पश्य्, और इष् को इच्छ् आदेश हो जाता है। किन्तु लृट् लकार में धातु अपने असली रूप में ही रहता है। इन धातुओं के प्रथम पुरुष एकवचन के रूप सब लकारों में दिये जाते हैं।

धातु	लट्	लङ्	लोट्	विधिलिङ्	लृट्
गम्-गच्छ्	गच्छति	अगच्छत्	गच्छतु	गच्छेत्	गमिष्यति
पा-पिब्	पिबति	अपिबत्	पिबतु	पिबेत्	पास्यति
स्था-तिष्ठ्	तिष्ठति	अतिष्ठत्	तिष्ठतु	तिष्ठेत्	स्थास्यति
दा-यच्छ्	यच्छति	अयच्छत्	यच्छतु	यच्छेत्	दास्यति
दृश्-पश्य्	पश्यति	अपश्यत्	पश्यतु	पश्येत्	द्रक्ष्यति

तुदादिगण

तुदादिगण में भी धातु और प्रत्यय के बीच में 'श' विकरण आता है। और केवल इतना है कि जहाँ भ्वादिगण की धातुओं के अन्तिम तथा उपान्तिम वर्ण के पहले आये हुए 'इ' 'उ' तथा 'ऋ' को ए, ओ तथा अर् हो जाता है, वहाँ तुदादिगण में ऐसा नहीं होता। उदाहरण के लिये जि + अ + ति ⟹ जे + अ + ति ⟹ जय् + अ + ति = जयति। परन्तु तुद् + अ + ति = तुदति

तुद् = दुःख देना

लट् लकार

प्रथम पुरुष	तुदति	तुदतः	तुदन्ति
मध्यम पुरुष	तुदसि	तुदथः	तुदथ
उत्तम पुरुष	तुदामि	तुदावः	तुदामः

लङ् लकार

प्र० पु०	अतुदत्	अतुदताम्	अतुदन्
म० पु०	अतुदः	अतुदतम्	अतुदत
उ० पु०	अतुदम्	अतुदाव	अतुदाम

लोट् लकार

प्र० पु०	तुदतु	तुदताम्	तुदन्तु
म० पु०	तुद	तुदतम्	तुदत
उ० पु०	तुदानि	तुदाव	तुदाम

विधि लिङ्

प्र० पु०	तुदेत्	तुदेताम्	तुदेयुः
म० पु०	तुदेः	तुदेतम्	तुदेत
उ० पु०	तुदेयम्	तुदेव	तुदेम

लृट् लकार

प्र० पु०	तोत्स्यति	तोत्स्यतः	तोत्स्यन्ति
म० पु०	तोत्स्यसि	तोत्स्यथः	तोत्स्यथ
उ० पु०	तोत्स्यामि	तोत्स्यावः	तोत्स्यामः

लिख्, क्षिप्, मिल्, स्पृश्, इष् (इच्छ्), प्रच्छ् (पृच्छ्), आदि तुदादिगण की अन्य धातुओं के रूप भी इसी प्रकार जानने चाहिये।

दिवादिगण

दिवादिगण में 'य' विकरण आता है जैसे दिव् + य + ति = दीव्यति, नृत् + य + ति = नृत्यति, नश् + य + ति = नश्यति

दिव् — चमकना

लट् लकार

प्र० पु०	दीव्यति	दीव्यतः	दीव्यन्ति
म० पु०	दीव्यसि	दीव्यथः	दीव्यथ
उ० पु०	दीव्यामि	दीव्यावः	दीव्यामः

लङ् लकार

प्र० पु०	अदीव्यत्	अदीव्यताम्	अदीव्यन्
म० पु०	अदीव्यः	अदीव्यतम्	अदीव्यत
उ० पु०	अदीव्यम्	अदीव्याव	अदीव्याम

लोट् लकार

प्र० पु०	दीव्यतु	दीव्यताम्	दीव्यन्तु
म० पु०	दीव्य	दीव्यतम्	दीव्यत
उ० पु०	दीव्यानि	दीव्याव	दीव्याम

वि० लिङ्

प्र० पु०	दीव्येत्	दीव्येताम्	दीव्येयुः
म० पु०	दीव्येः	दीव्येतम्	दीव्येत
उ० पु०	दीव्येयम्	दीव्येव	दीव्येम

लृट् लकार

प्र० पु०	देविष्यति	देविष्यतः	देविष्यन्ति
म० पु०	देविष्यसि	देविष्यथः	देविष्यथ
उ० पु०	देविष्यामि	देविष्यावः	देविष्यामः

चुरादि गण

चुरादि गण में णिच विकरण लगता है। जैसे चुर् + णिच + ति = चोर् + अय + ति = चोरयति ।

लट् लकार चुर् = चुराना

प्र० पु०	चोरयति	चोरयतः	चोरयन्ति
म० पु०	चोरयसि	चोरयथः	चोरयथ
उ० पु०	चोरयामि	चोरयावः	चोरयामः

लङ् लकार

प्र० पु०	अचोरयत्	अचोरयताम्	अचोरयन्
म० पु०	अचोरयः	अचोरयतम्	अचोरयत
उ० पु०	अचोरयम्	अचोरयाव	अचोरयाम

लोट् लकार

प्र० पु०	चोरयतु	चोरयताम्	चोरयन्तु
म० पु०	चोरय	चोरयतम्	चोरयत
उ० पु०	चोरयाणि	चोरयाव	चोरयाम

विधि लिङ्

प्र० पु०	चोरयेत्	चोरयेताम्	चोरयेयुः
म० पु०	चोरयेः	चोरयेतम्	चोरयेत
उ० पु०	चोरयेयम्	चोरयेव	चोरयेम

लृट् लकार

प्र० पु०	चोरयिष्यति	चोरयिष्यतः	चोरयिष्यन्ति
म० पु०	चोरयिष्यसि	चोरयिष्यथः	चोरयिष्यथ
उ० पु०	चोरयिष्यामि	चोरयिष्यावः	चोरयिष्यामः

गण्, ताड्, चिन्त्, दण्ड् आदि धातुओं के रूप भी इसी प्रकार जानने चाहिये।

७. सरल उपसर्गों [illegible]

८. सरल धातुओं के क्त्वा, क्त, कृदन्तों का प्रयोग।

९. इन उपयोगी अव्ययों का प्रयोग :— अत्र, तत्र, कुत्र, यथा, तथा, कथम्, यदा, तदा, कदा, सह, अपि च, अतः, इतः, इतस्ततः, उपरि

१०. स्वर सहित संस्कृत पद्यों का शुद्ध उच्चारणपूर्वक सस्वरपाठ (Recitation)

११. दस सुभाषित और सूक्तियों का कण्ठस्थ करना।

१२. सरल हिन्दी से संस्कृत में तथा सरल संस्कृत से हिन्दी में अनुवाद।

नोट :— इस श्रेणी के लिये एक ऐसी ६४ पृष्ठों की पाठ्य पुस्तक निश्चित की जाये जिस में ऊपर दिये गये पाठ्य क्रम के आधार पर संस्कृत के पाठ्य विषय, व्याकरण तथा अनुवाद की शिक्षा क्रमबद्ध हो। व्याकरण की पृथक् पुस्तक न होगी। इस श्रेणी में पढ़ाये गये व्याकरण का विषय पाठ्य पुस्तक में प्रत्येक पाठ के अन्त में तथा सम्पूर्ण पुस्तक के अन्त में विस्तार से परिशिष्ट में दिया जावे।

दिव् — चमकना

लट् लकार

प्र॰पु॰	दीप्यति	दीप्यतः	दीप्यन्ति
म॰पु॰	दीप्यसि	दीप्यथः	दीप्यथ
उ॰पु॰	दीप्यामि	दीप्यावः	दीप्यामः

लङ् लकार

प्र॰पु॰	अदीप्यत्	अदीप्यताम्	अदीप्यन्
म॰पु॰	अदीप्यः	अदीप्यतम्	अदीप्यत
उ॰पु॰	अदीप्यम्	अदीप्याव	अदीप्याम

लृट् लकार

म॰पु॰	अचोरयः	[illegible]	अचोरयत
उ॰पु॰	अचोरयम्	अचोरयाव	अचोरयाम

लोट् लकार

प्र॰पु॰	चोरयतु	चोरयताम्	चोरयन्तु
म॰पु॰	चोरय	चोरयतम्	चोरयत
उ॰पु॰	चोरयाणि	चोरयाव	चोरयाम

विधि लिङ्

प्र॰पु॰	चोरयेत्	चोरयेताम्	चोरयेयुः
म॰पु॰	चोरयेः	चोरयेतम्	चोरयेत
उ॰पु॰	चोरयेयम्	चोरयेव	चोरयेम

Syllabus in SANSKRIT

Class VI

1. वर्णविचार, अक्षरों तथा मात्राओं का पूर्ण ज्ञान, अक्षरों का उच्चारण, संयुक्त अक्षर।
2. स्वरान्त शब्दों के रूप सब कारकों में :—
   (1) अकारान्त — पुल्लिङ्ग और नपुंसकलिङ्ग में।
   (2) इकारान्त और उकारान्त पुं० और नपुं० में।
   (3) आकारान्त स्त्रीलिङ्ग में।
3. सर्वनाम (1) सर्व, तत्, किम्, एतत् पुं० व नपुं० में।
   (2) अस्मद् और युष्मद्।
4. बीस तक संख्यावाचक शब्दों का साधारण ज्ञान।
5. भ्वादि, दिवादि, तुदादि, चुरादि गणों की मुख्य धातुओं, सरल धातुओं के रूप लट्, लङ्, लोट् और विधिलिङ् में।
6. लृट् लकार में निम्नलिखित धातुओं के रूप —
   पठ्, (वद्) पत्, गम्, दा, पा, ज्ञा, स्था।
7. सरल उपसर्गों का धातुओं के साथ प्रयोग।
8. सरल धातुओं के क्त्वा, ल्यप्, तुमुन् का प्रयोग।
9. इन उपयोगी अव्ययों का प्रयोग :— अत्र, तत्र, कुत्र, यथा, तथा, कदापि, कदा, तदा, यदा, सह, अपि, अद्य, श्वः, ह्यः, इदानीम्, अधुना इत्यादि।
10. बीस सरल संस्कृत पद्यों का शुद्ध उच्चारणपूर्वक कण्ठपाठ (Recitation)
11. दस सुभाषित और सूक्तियों का कण्ठस्थ करना।
12. सरल हिन्दी से संस्कृत में तथा सरल संस्कृत से हिन्दी में अनुवाद।

नोट :— इस श्रेणी के लिये एक ऐसी ६४ पृष्ठों की पाठ्य पुस्तक नियत की जाये जिसमें ऊपर दिये गये पाठ्य क्रम के अनुसार संस्कृत के पाठ्य विषय, व्याकरण तथा अनुवाद की शिक्षा क्रमबद्ध हो। व्याकरण की पृथक पुस्तक न होगी। इस श्रेणी में पढ़ाये गये व्याकरण का विषय पाठ्य पुस्तक में प्रत्येक पाठ के अन्त में तथा पुस्तक के अन्त में विशेष रूप से परिशिष्ट में दिया जाये।

१८० — पनका।